ख़ामोशी की लहरें

काव्य संग्रह

रेन्द्र नाथ बली गाबिन्द

ताब में छपी ग़ज़लें उन्नीस सौ नब्बे
के बीच हुई थी। सितम्बर उन्नीस सौ
बई में एक म्यूज़िकल सीरियल लिख
ी पर दिखाए जाने के लिए। इसको
ए मुझे कोई चालीस के करीब गाने
इससे पहले मैंने ड्रामे वगैरह तो कई
गाने लिखने का ये पहला मौक़ा था।
ीरियल को लिखने के बाद दिल्ली आ

दिल्ली वापस आ जाने के बाद भी वो
जो इतने गाने एकदम लिखने से दिल
में छिड़ गया था वो फिर दुबारा ख़ामोश
।वो दिन है और आज का दिन अकसर
र के तड़के के आलम में अचानक आँख
और एक नई ग़ज़ल का मतला दिमाग़
ा पाता हूँ। और फिर शेर एक के बाद
है जैसे किसी बहुत अर्से से बन्द क़ुव्वत
मिल गई है। मैं इन्हें ऊपरवाले का प्रसाद
र बड़ी इज्ज़त के साथ फौरन बिस्तर
न्हें एक कापी में नोट कर लिया करता
छ सँवारना सँजोना तो पड़ता है मगर
र पर सब कुछ न जाने मेरे वजूद की
ी हुई गहराइयों से निकल कर आता

1-241-0128-0

ख़ामोशी की लहरें

वीरेन्द्र नाथ बली 'गोबिन्द'

अदब पब्लिकेशन्स
364 ए, चिराग दिल्ली,
नई दिल्ली - 110 017

हर-आनन्द पब्लिकेशनस
364-A, चिराग दिल्ली, नई दिल्ली - 110 017.

प्रकाशन वर्ष 1994

प्रकाशित श्री अशोक गोसाई द्वारा हर-आनन्द पब्लिकेशन के लिए और प्रकाशित नाईस प्रिंट्रिग प्रेस, दिल्ली 110 032.

Foreword

Virendra Nath Bali is a sensitive poet. I am happy that his collection of poems "Waves of Silence" has been assembled. Rarely, a writer adopts Devnagri script with Urdu language, and here, an attempt has been made to provide both the scripts, Urdu and Devnagri, side by side, to project these verses to a wider audience. These scripts, also, symbolise the mutual affinity of different cultural groups with diversity of appreciation in their chosen languages.

India survives with an innate affinity of mutual understanding of values, in language, culture and thought. In this context, this collection of poems, further provides, a testimony, towards a happier and a harmonious living in these multi-facet environments.

Amar Nath Sehgal
Founder Director, The Creative Fund

भूमिका

वो मंज़र जिसमें सारी कायनात के वुजूद का एहसास एक अखंड मंडल की शक्ल में होता है जिसमें सब कुछ शामिल है और जिसके बाहर कुछ नहीं उस मंजर को दिखाने वाले जो मेरे गुरू हैं मैं सबसे पहले उनकी इबादत करता हूँ।

इसके बाद मैं उन मेहरबानों का शुक्रिया अदा करना चाहूँगा जिनकी वजह से मौजूदा किताब शाया हो रही है। इनमें पहला नाम है जनाब अमरनाथ जी सेहगल साहब का जिन्होंने पहली बार जनवरी उन्नीस सौ तिरान्नवे में मेरी दो तीन ग़ज़लें सुन कर ही मेरी शायरी को इस क़ाबिल समझा कि इसे एक दीवान की सूरत में शाया किया जाए। यही नहीं उन्होंने तो ख़ुद इस .खयाल को अंजाम भी देने का बीड़ा उठा लिया और न सिर्फ मेरी मुलाक़ात हर-आन्नद पब्लिकेशन्स के नरेन्द्र कुमार जी से करवाई बल्कि इस किताब के शाया होने के लिए फ़ौरन माली मदद भी दे दी।

फिर मैं अपने छोटे भाई नरेन्द्र बली (मुकन्द जी) का शुक्रियाअदा करना चाहूँगा। मुकन्द जी अमरीका में रहता है और इस जनवरी में छुट्टियों पर हिन्दोस्तान ये तहइया करके आया था कि मुझे मेरे डूबे हुए बिज़नेस की दलदल से बाहर निकाल कर इस क़ाबिल बना के जाएगा कि मैं अपना पसंदीदा लिखने लिखाने का काम बिना किसी दूसरी फ़िक्रो परेशानियों में मुब्तिला रहे पूरा मन लगा के कर सकूँ। और अपने इस मक़सद में क़ामियाब होने की तरफ़ मुझे अमर नाथ सहगल साहब से मिलवाना शायद उसका पहला क़दम था। वो और भी बहुत कुछ कर गया और कर रहा है इस सिलसिले में जिसकी तफ़सील यहाँ बयान करना वाजिब नहीं।

तीसरे मैं नरेन्द्र कुमार साहब का शुक्रियाअदा करूंगा जिन्होंने मेरे जैसे एक नये शायर के कलाम को शाया करके नवाज़ दिया है।

मैं फिर ऐसोसियेटेड आर्टिस्ट्स के एन. एन. सेठी साहब का

शुक्रियाअदा करूंगा जिन्होंने न सिर्फ़ मेरे इन ग़ज़लों के मजमुए को उर्दू स्क्रिप्ट में लिखवाने का इन्तज़ाम जनाब नज़ीर अहमद साहब की मार्फ़त करवाया बल्कि मेरी ग़ज़लें सुनकर बहुत ही हौसला बढ़ाने वाली दाद भी दी। सेठी साहब जैसे आर्ट के क़दरदान से दाद मिलना मैं अपनी इन्तेहाई इज़्ज़तअफ़ज़ाई समझता हूँ।

मेरी शायरी में कई मुख़्तलिफ़ रंग नज़र आते हैं। इसकी वजह एक तो ये है कि मेरे ऊपर मेरे मरहूम वालिद राय सुरेन्द्र नाथ बली साहब 'ग़रीब', मेरे मरहूम दादा जान रायबहादुर रायचन्द्र हर बली साहब और मेरे मरहूम नाना जान राय बहादुर बिन्द्राबन साहब तीनों का कुछ न कुछ असर है और क्योंकि ये तीनों मरहूम शोअरा एक दूसरे से क़त्तई जुदा अंदाज़ में लिखते थे मेरी शायरी कुछ रंग बिरंगी सी हो गई। मेरे वालिद मरहूम का संजीदा और फ़लसफ़ाना अंदाज़ था और एक ऊँचे मयार के मूसीक़ार होने की वजह से उनकी शायरी की नस नस में तरन्नुम गूँजता था। मिसाल के तौर पर :

बिखर जाएगी मेरी दास्ताँ राज-ए जहाँ बनकर
गुबार-ए-आसमाँ बन कर

न होंगी मंज़िलें हाइल न होगा हमसफ़र कोई
पड़े रह जाएँगें सेहरा में नक़्श-ए-कारवाँ बन कर
ज़मीं के मेहमाँ बन कर

ज़मीं भी रख न पाएगी हमारी बु-ए-हस्ती को
गुज़र जाँएगें गुलशन से गुल-ए-दौर-ए-खिज़ाँ बनकर
निगाह-ए-बाग़बाँ बनकर

दूसरी तरफ़ मेरे मरहूम दादा जान, बृन्दाबन के बाँके बिहारी जी और राधिका जी के बड़े भारी भक्त थे। उन्होंने ही हम चारों भाइयों के नाम कृष्ण जी के नामों पर गोपाल, गोबिन्द, मुकन्द और माधव रखे थे। उनकी सारी शायरी जो कि कई सौ कवित्त और सैकड़ों शेर और ग़ज़लें वग़ैरह हैं सिर्फ़ मीठे भक्ति रस से भरी हुई

है। मिसाल के तौर पर:

बाँके बिहारी जी के हैं संकट हरन-चरन
तुम साफ़ रक्खो आइना-ए-दिल को चंद्र हर
होंगे कभी तो आपके जलवा फ़िशन-चरन

तीसरी तरफ मरहूम नाना जान ज़्यादातर मज़ाहिया और तनज़िया रंग में ही शायरी करते थे। मिसाल के तौर पर:

जाता तो हूँ कुए जानाना तक
न सही मुलाक़ात कसरत ही सही

या

जबसे बढ़ाई डाढ़ी कम बोलने लगे वो
है बेसदा वो चीनी जिसमें कि बाल आया

या

कल रात मुझसे भागी बंगश के पुल गई
मैं उसके पीछे भागा पर लाँग खुल गई
सारी रात ढूँढ़ा सुबह खुद ही मिल गई
यूँ ही फ़िराक़-ए भैंस में शब अपनी घुल गई

ग़रज़ ये कि इन तीन रंगों से मेरी शायरी मुतास्सिर हुई है। ज़्यादा असर मुझे लगता है वालिद मरहूम का ही हुआ है क्योंकि जो भी सुनता है वो मेरे अलफ़ाज़ में मूसीक़ी और लयकारी पाता है।

एक और हक़क़ीत जिसका मेरे सुख़न की मौजूदा शक्लो सूरत पर गहरा असर रहा है वो ये है कि मैं अरबी स्क्रिप्ट (जिसमें कि आम तौर पर उर्दू लिखी पढ़ी जाती है।) का अलिफ़ बे भी नहीं जानता हूँ।

हमें स्कूली तालीम के वक़्त से ही देवनागरी लिपि में ही सब कुछ पढ़ाया लिखाया गया हालांकि हमारी लखनऊ वालों की

मादरी ज़बान उर्दू ही थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि पार्टीशन के फ़ौरन बाद से उर्दू से अपनी ज़बान का वुजूद जितना अलग हो सके दिखाने के लिये एकदम से आकाशवाणी के समाचारों और कई-हिन्दी अख़बारों में ऐसे नये नये अटपटे अलफ़ाज ले कर ज़बान इस्तेमाल होने लगी कि जो हमारी हिन्दोस्तानियों की ख़ुद ही ठीक से समझ में नहीं आती थी। लगता ही नहीं था कि ये हमारी बोली है।

मुझे अच्छी तरह याद है कि हमारे कालेज के वक़्तों में हम लोग जिन्हें उम्दा लिटरेचर पढ़ने का शौक़ था वो ये महसूस करते थे कि काश हमें उर्दू स्क्रिप्ट पढ़ना आता होता तो हम उर्दू के अच्छे अच्छे शायरों और अदीबों को पढ़ सकते। उस वक़्त तक हिन्दी लिटरेचर में पढ़ने के लिये कुछ ख़ास नहीं था जो कि कालेज के लेवल पर लगी हुई दिमाग़ी प्यास को बुझा सके। हम लोग हार के अंग्रेजी या अंग्रेजी में तर्जुमा किया हुआ रूसी फ्रांसीसी लिटरेचर पढ़ के गुज़ारा किया करते थे।

बड़ी सख़्त कोफ़्त होती थी। ऐसा लगता था जैसे हमारी एक पूरी पीढ़ी अपनी अदबी रवायात और तहज़ीब से कटती चली जा रही है।

आज भी जब उर्दू ज़बान को प्रमोट करने की बात होती है तो उर्दू की कानसेप्ट अरबी स्क्रिप्ट में लिखी जाने वाली ज़ुबान तक ही महदूद मान के बात करते हैं उर्दू के हिमायती।

इसमें कोई शक नहीं कि स्क्रिप्ट और ज़बान का आपस में चोली दामन का साथ होता है। लेकिन हमें ये नहीं भूल जाना चाहिए कि किसी भी ज़ुबान की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है एक की बात दूसरे तक पहुँचाना। ज़ुबान में अलफ़ाज़ होते है और अलफ़ाज़ एक ज़रिया हैं एक गाड़ी हैं जिसमें बैठ कर अलफ़ाज़ी शक्ल में जो मआनी हैं उन्हें एक से दूसरी जगह पहुँचाया जाता है। ऐसे में ये कहाँ की अक़्लमंदी है कि मआनी जो एक जगह कोठरी में बन्द

सड़ रहे हैं उनको वहाँ से निकाल कर उनकी मंजिलों तक पहुँचाने को अहमियत न दे कर इस बात को.ज्यादा अहमियत दी जाए कि ये कौन सी गाड़ी में बैठ कर जाएँगे।

हक़ीक़त ये है कि चाहे वो किसी की ग़लती से क्यों न हुआ हो आज के दिन हमारे मुल्क में लखनऊ दिल्ली हैदराबाद जो भी ऐसे इलाक़े हैं जहां की उर्दू मादरी ज़बान है और आम बोल चाल की बोली है वहाँ.ज्यादातर पढ़े लिखे लोग देवनागरी ही पढ़ लिख सकते हैं अरबी स्क्रिप्ट उन्हें कभी पढ़ाई ही नहीं गई। इसलिए बजाय इसके कि इन तमाम उर्दू वाले इलाक़ो में हम पहले उर्दू स्क्रिप्ट सिखाए जाने के लिए एक लम्बी लड़ाई लड़ते रहें क्यों न उर्दू लिखने पढ़ने के लिये हम देवनागरी स्क्रिप्ट का ही इस्तेमाल आम तौर पर शुरू कर दें ?

कम से कम उर्दू ज़बान तो ज़िन्दा रहेगी। क्या उर्दू के चाहने वाले ये नहीं चाहते ?

क्या हम पढ़े लिखे अदीबों और शोअराओं को भी उन सियासी मतलबियों के बहकावे में आ जाना चाहिए जो उर्दू ज़ुबान को मुस्लिम मज़हब और हिन्दी को हिन्दू धर्म के साथ नत्थी करना चाहते हैं ?

मैं उन पब्लिशर्स का तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने उर्दू के मशहूर हिन्दोस्तानी और पाकिस्तानी शायरों का कलाम देवनागरी स्क्रिप्ट में छापा है जिसकी बदौलत मेरे जैसे अदबी प्यासों को राहत मिली है।

वैसे ये रास्ता दुतर्फा है। जहाँ अदब से आम बोलचाल की ज़ुबान सँवरती है वहाँ अदब भी आम बोल-चाल से मुसलसल राब्ता रहने से तरोताज़ा होता रहता है। जो अदब आम बोल चाल से कट जाता है उसका फिर संस्कृत वाला हाल हो जाता है वो फिर लाइब्रेरियों की अलमारियों तक ही महदूद हो कर रह जाता है।

.खैर ये सब तो बात रही उन असरात की जिन्होंने मेरे सुख़न

की शक्लो सूरत के ढलने में अपना अपना रोल अदा किया। मगर सूरत से .ज़्यादा शायद सीरत की अहमियत मानी गई है।

मेरी शायरी में फ़िक्र जो है उसमें आपको मुसलसल तौर पर एक मज़मून मिलेगा और वो है वेदान्त यानी ये एहसास कि वो एक ही है और उसके इलावा या उसके बाहर कुछ नहीं है। ये मेरी रूहानी गुरू और मेरी सब कुछ श्री श्री आनन्दमयी माँ की बड़ी भारी मेहर है देन है। जो बातें कहने सुनने या समझने के परे होती हैं वो माँ जैसे मुक़द्दस संतों पीरों फ़क़ीरों की बारगाहों में जाने से अपने एहसासात की गहराइयों में कब होकर जज़्ब हो जाती है ये कोई नहीं जान सकता।

मेरा तख़ल्लुस 'गोबिन्द' मेरे बचपन से मेरा घर का नाम है जिससे मैं अपने आप को पहचानता हूँ। शायरी बहुत गहरा ज़ाती हादिसा होने की वजह से ये नाम इसके साथ बेसाख़्ता ही वाबस्ता होने से रह न सका।

मुझे देवनागरी में शाया तक़रीबन उर्दू के सारे ही मशहूर शायरों का कलाम पढ़ने को मिला। मुझे ख़ास तौर पर मीर तक़ी मीर, फ़ैज़ अहमद फ़ैज़, जिगर मुरादाबादी, अहमद फ़राज़, फ़िराक़ गोरखपुरी, नदीम क़ासमी और क़तील शिफ़ाई की शायरी ने मुतास्सिर किया।

फ़िराक़ का जो इस क़िस्म का रंग है जैसेः

हिज्र-ओ-विसाल-ए-यार का पर्दा उठा दिया
.ख़ुद बढ़ के इश्क़ ने मुझे मेरा पता दिया

इसने मुझ पर गहरी छाप डाली।

मेरे ज़हन में ललित कलाओं यानी फ़ुनून-ए-लतीफ़ा का जो कानसेप्ट हमेशा रहा है वो है कि वो जो बयान के परे है उसकी तरफ़ दिलकश अंदाज़ में मुबहम सा इशारा भर। चाहे वो अलफ़ाज़

के ज़रिए हो चाहे पेन्ट और ब्रश के ज़रिये हो, चाहे मूसीक़ी के ज़रिये हो, चाहे फ़िल्म के ज़रिये।

मिसाल के तौर पर फ़ैज का शेर:

वो बात सारे फ़साने में जिसका ज़िक्र न था
वो बात उनकों बहुत नागवार गुज़री है

अहमद नदीम क़ासमी का शेर:

बुला रहे हैं उफ़क़ पर वो ज़र्द रू टीले
कहो तो हम भी फ़सानों के राज़ हो जाएँ
क़तील शिफ़ाई :
चलो अच्छा हुआ काम आ गई दीवानगी अपनी
वगरना हम ज़माने भर को समझाने कहाँ जाते

मतलब ये कि अलफ़ाज़ तो पोल वाल्ट वाले डंडे की तरह हैं जिनकी मदद से हम फाँद कर उनकी अपनी ऊँचाई से.ज्यादा बुलन्दी पार कर जाते है।

मैं इस किताब के शाया होने के मौक़े पर अपनी रफ़ीक़-ए-हयात चन्द्रा बली का भी शुक्रिया अदा करना चाहूँगा उन सब ज़िल्लतों और परेशानियों के लिए जो आज कल की दुनिया में एक नाक़ामियाब इन्सान की बीवी को उठानी पड़ती हैं।

वीरेन्द्र नाथ बली 'गोबिन्द'

ए-322, सरिता विहार,
नई दिल्ली-110011

ग़ज़ल

तू न दे जगह मुझे बज़्म में तेरे दिल में बस मैं रहा करूं
कोई और मेरी न जान हो तेरी जान में ही जिया करूं

हूँ जो मैं अलग कभी .खुद से यूँ जैसे आसमाँ है ज़मीन से
मिले जिस तरह कोई ग़ैर से कभी .खुद से यूँ भी मिला करूं

यूँ तो मागूँ क्या मैं है सब वहम प जो हो सके तो तू इतना कर
मुझे यूँ लगे तूने सुन लिया तेरा नाम जब मैं लिया करूं

ये जो जाम हैं कई रंग के इन्हें इस तरह से मैं पी सकूँ
मुझे मय लगे वही एक ही किसी जाम से भी पिया करूं

है तो जुस्तजू मुझे तेरी ही प ये आरज़ू सी है साथ में
मुझे यूँ लगे मेरा राज़ है तेरा राज़ जब मैं पता करूं

हैं जो बिजलियाँ तेरे हुस्न की भरें इस तरह ये कलाम में
मुझे यूँ लगे तुझे छू लिया कोई शेर जब मैं कहा करूं

तेरी चाह में मेरी चाह हो तेरी आह में मेरी आह हो
लगूँ काम में तेरे मुब्तिला कोई साँस जब मैं लिया करूं

कभी खो के गर वो 'गोबिन्द' जो मुझे पाने की करे आरज़ू
मैं सुख़नवरों के .ख्याल में उसे दर्द बन के मिला करूं

غزل

تو نہ دے جگہ مجھے بزم میں تیرے دل میں بس میں رہا کروں
کوئی اور میری نہ جان ہو تیری جان میں ہی جیا کروں

ہوں جو میں الگ کبھی خود سے یوں جیسے آسماں ہے زمین سے
ملے جس طرح کوئی غیر سے کبھی خود سے یوں کبھی ملا کروں

یوں تو مانگوں کیا میں ہے سب وہم پہ جو ہو سکے تو تو اتنا کر
مجھے یوں لگے تو نے سن لیا تیرا نام جب میں لیا کروں

یہ جو جام ہیں کئی رنگ کے انہیں اس طرح سے میں پی سکوں
مجھے میں لگے وہی ایک ہی کسی جام سے بھی پیا کروں

ہے تو جستجو مجھے تیری ہی پہ آرزو سی ہے ساتھ میں
مجھے یوں لگے میرا راز ہے تیرا راز جب میں پتہ کروں

ہیں جو بجلیاں تیرے حسن کی بھریں اس طرح یہ کلام میں
مجھے یوں لگے تجھے چھو لیا کوئی شعر جب میں کہا کروں

تیری چاہ میں میری چاہ ہو تیری آہ میں میری آہ ہو
لگوں کام میں تیرے مبتلا کوئی سانس جب میں لیا کروں

کبھی کھو کے گروہ گو بتد جو مجھے پانے کی کرے آرزو
میں سخنوروں کے خیال میں اسے درد بن کے ملا کروں

ग़ज़ल

ज़िन्दगी रह जाएगी क्या राज़ खुल जाने के बाद
जैसे यादें रास्ते की घर को आ जाने के बाद

.ख्वाब में तो .ख्वाब का कोई इल्म होता है नहीं
कैसे जानेंगे खुली कब आँख लग जाने के बाद

खो तो दें हम .खुद को उसमें क्या करेंगे हम अगर
रह गया कुछ पूछने को उसके मुस्काने के बाद

जाने का भी वक़्त होगा छोड़ कर रंगीनियाँ
बज़्म में चर्चा है अब ये उनके आ जाने के बाद

रूख़ पे बिखरेगी या उनके दिल पे वो लहराएगी
क्या ठिकाना होगा उनकी ज़ुल्फ़ का शाने के बाद

जानते हैं सच मगर मानूस हैं हम झूठ से
बिस्तरों का एक मज़ा है नींद खुल जाने के बाद

ज़िन्दगी के बाद आना मौत का है इस तरह
जैसे आँसू का टपकना आँख भर आने के बाद

غزل

زندگی رہ جائے گی کیا راز کھل جانے کے بعد
جیسے یاد یں راستے کی گھر کو آ جانے کے بعد

خواب میں تو خواب کا کوئی عِلم ہوتا ہے نہیں
کیسے جانیں گے کھلی کب آنکھ لگ جانے کے بعد

کھو تو دیں ہم خود کو اُس میں کیا کریں گے ہم اگر
رہ گیا کچھ پوچھنے کو اُس کے مُسکانے کے بعد

جانے کا بھی وقت ہو گا چھوڑ کر رنگینیاں
بزم میں چرچا ہے اب یہ ان کے آ جانے کے بعد

رُخ پہ بکھرے گی یا ان کے دل پہ وہ لہرائے گی
کیا ٹھکانہ ہو گا اُن کی زلف کا شانے کے بعد

جانتے ہیں سچ مگر مانوس ہیں ہم جھوٹ سے
بستروں کا ایک مزہ ہے نیند کھل جانے کے بعد

زندگی کے بعد آنا موت کا ہے اس طرح
جیسے آنسو کا ٹپکنا آنکھ بھر آنے کے بعد

ज़िन्दगी बरबाद कर दी सामने ना आए वो
अब के देखेगें उन्हें हम ख़्वाब में आने के बाद

इश्क़ में सब लुट गया तो जानिए सब मिल गया
एक से बचता है एक ही एक के जाने के बाद

जाने क्या करते जो करना चाहते उसका बयाँ
गर न माने और होते लफ़्ज के माने के बाद

आँख माँगी है कि असली हुस्न का दीदार हो
कुछ न दीखे काश उससे आँख मिल जाने के बाद

ये भी था मेरी हिफ़ाज़त के लिए उसका करम
लोग मेरी बात समझे मेरे मर जाने के बाद

बेख़ुदी में मिल गया होता हमें अपना पता
काश हम बेहोश होते होश में आने के बाद

यूँ पड़ी रह जाएगी जैसे सुख़न 'गोबिन्द' का
क्या करेंगे वो नज़र की बात कह जाने के बाद

زندگی برباد کر دی سامنے نہ آئے وہ
اب کے دیکھیں گے اُنہیں ہم خواب میں آنے کے بعد

عشق میں سب لٹ گیا تو جانیئے سب مل گیا
ایک سے بچتا ہے ایک ہی ایک کے جانے کے بعد

جانے کیا کرتے جو کرنا چاہتے اُس کا بیاں
گر نہ معنے اور ہوتے لفظ کے معنے کے بعد

آنکھ مانگی ہے کہ اصلی حُسن کا دیدار ہو
کچھ نہ دیکھے کاش ان سے آنکھ مل جانے کے بعد

بے خودی میں مل گیا ہوتا ہمیں اپنا پتہ
کاش ہم بے ہوش ہوتے ہوش میں آنے کے بعد

یہ بھی تھا میری حفاظت کے لئے اُس کا کرم
لوگ میری بات سمجھے میرے مر جانے کے بعد

یوں پڑی رہ جائے گی جیسے سخن گو بند کا
کیا کریں گے وہ نظر کا بات کہہ جانے کے بعد

ग़ज़ल

जैसे ख़ुशी जहान की तेरी हँसी में है
कोई एक चीज़ लीजिए सब कुछ उसी में है

कहती हैं लहलहा के ये गेहूँ की बालियाँ
जो है ख़ुदा में राम में इसामसी में है

गर है वो माँ के प्यार में मुफ़लिस की भूख में
मक्का में है अगरचे तो वारांनसी में है

कमज़ोरियाँ हैं मेरी प मुश्किल कुशा मेरे
तेरा भी कुछ तो हाथ मेरी बेबसी में है

इन्सानी ज़िन्दगी को बिताने का कुछ सवाब
शायद नहीं है ज़ोर में पर बेकसी में है

'गोबिन्द' ये हमारी समझ का ही है क़ुसूर
लगता है वो किसी में नहीं और किसी में है

غزل

جیسے خوشی جہان کی تیری ہنسی میں ہے
کوئی ایک چیز ایسی ہے سب کچھ اُسی میں ہے

کہتی ہیں لہلہا کے یہ گیہوں کی بالیاں
جو ہے خدا میں رام میں عیسیٰ مسیح میں ہے

گر ہے وہ ماں کے پیار میں مُفلس کی بھوک میں
مکّہ میں ہے اگرچہ تو وارانسی میں ہے

کمزوریاں ہیں میری یہ مشکل کُشا میرے
تیرا بھی کچھ تو ہاتھ میری بے بسی میں ہے

انسانی زندگی کو بتانے کا کچھ ثواب
شاید نہیں ہے زور میں پر بے کسی میں ہے

گو بند یہ ہماری سمجھ کا ہی ہے قصور
لگتا ہے وہ کسی میں نہیں اور کسی میں ہے

ग़ज़ल

एक एहसास-ए-करम दिल में समाता जा रहा है
कोहसारों पर सुकूत-ए-शाम छाता जा रहा है

आ रही है याद उसकी वादियों में गूँज कर
दूर वीराँ में कोई बन्सी बजाता जा रहा है

लगती जाती है वो सूरत और भी बेनाम सी
जैसे जैसे हाफ़िज़े में नाम आता जा रहा है

दिल को यूँ महसूस होता है तेरी जानिब सफ़र
जैसे कोई साज़ को सुर में मिलाता जा रहा है

छुप के भी वो किस तरह से दीख सकता है हमें
सामने आँखों के वो छुपकर दिखाता जा रहा है

हो रहा है जो भी मुझसे उसको पाने के लिये
है करम उसका कि वो मुझसे कराता जा रहा है

ले गई जबसे खिज़ाँ असली समझ गुलज़ार से
मेरा गुल तो मेरे दिल में मुस्कुराता जा रहा है

ख़ामुशी में तेरी 'गोबिन्द' गूँजते नग़मात थे
अब सदा-ए-ख़ामुशी गा कर सुनाता जा रहा है

غزل

ایک احساسِ کرم دل میں سماتا جا رہا ہے
کہساروں پر سکوتِ شام چھاتا جا رہا ہے

آ رہی ہے یاد اس کی وادیوں میں گونج کر
دور ویراں میں کوئی بنسی بجاتا جا رہا ہے

لگتی جاتی ہے وہ صورت اور بھی بے نام سی
جیسے جیسے حافظے میں نام آتا جا رہا ہے

دل کو یوں محسوس ہوتا ہے تیری جانب سفر
جیسے کوئی ساز کو سُر میں مِلاتا جا رہا ہے

چھپ کے بھی وہ کس طرح سے دِیکھ سکتا ہے ہمیں
سامنے آنکھوں کے وہ چھپ کر دکھاتا جا رہا ہے

ہو رہا ہے جو بھی مجھ سے اس کو پانے کے لئے
ہے کرم اس کا کہ وہ مجھ سے کراتا جا رہا ہے

لے گئی جب سے خزاں اصلی سمجھ گلزار سے
میرا گل تو میرے دل میں مُسکراتا جا رہا ہے

خاموشی میں تیری گو بند گونجتے نغمات تھے
اب صدائے خاموشی گا کر سُناتا جا رہا ہے

ग़ज़ल

हम एक रसन गुमान से नागन करे हुए
रहते हैं अपने राज में .खुद से डरे हुए

अब भी न जाने गोश-बर-आवाज़ क्यों है दिल
अब तो हुआ ज़मीर को अर्सा मरे हुए

रहते हैं समझिएगा एक .खयाल की तरह
हम ज़द में अपनी सोच की बेबस पड़े हुए

निकला नहीं है शर्म से कुछ देर माहताब
ग़लती से वो जो बाम पर आ कर खड़े हुए

अपने से जुदा हो के कभी हम भी एक दिन
आँखों से अपनी देख लें उनकी लड़े हुए

आते हैं वो भी याद तो अब और ही तरह
मुद्दत हुई है आँख में आँसू भरे हुए

मेरी तरह .खमोश शजर अपनी जगह पर
किसके हैं इन्तेज़ार में जाने खड़े हुए

आई है अब क्या सोच के बरसात करम की
पत्ते भी ज़र्द हो के कभी फिर हरे हुए

'गोबिन्द' दिल को चाहिए तसवीर एक ही
होठों पे वो सुकून की बन्सी धरे हुए

غزل

ہم ایک رسن گمان ہے ناگن کرے ہوئے
رہتے ہیں اپنے راج میں خود سے ڈرے ہوئے

اب بھی نہ جانے گوش برآواز کیوں ہے دل
اب تو ہوا ضمیر کو عرصہ مرے ہوئے

رہتے ہیں سمجھیئے گا ایک خیال کی طرح
ہم زد میں اپنی سوچ کی بے بس پڑے ہوئے

نکلا نہیں ہے شرم سے کچھ دیر ماہ تاب
غلطی سے وہ جو بام پر آ کر کھڑے ہوئے

اپنے سے جدا ہو کے کبھی ہم بھی ایک دن
آنکھوں سے اپنی دیکھ لیں اُن کی لڑے ہوئے

آتے ہیں وہ بھی یاد تو اب اور ہی طرح
مدّت ہوئی ہے آنکھ میں آنسو بھرے ہوئے

میری طرح خموش شجر اپنی جگہ پر
کس کے ہیں انتظار میں جانے کھڑے ہوئے

آئی ہے اب کیا سوچ کے برسات کرم کی
پتّے بھی زرد ہو کے کبھی پھر ہرے ہوئے

گو بند دل کو چاہیئے تصویر ایک ہی
ہونٹوں پہ وہ سکون کی ہنسی دھرے ہوئے

ग़ज़ल

पहले अपने को भुलाना आए
तब उसे दिल में बसाना आए

हूँ उस निगाह में सर-ए-महफ़िल
देखो जो राज़ छुपाना आए

कितनी झूठी है ज़िन्दगी जिसमें
मौत भी करके बहाना आए

दश्त में अपने .खयालों के फिरूं
कोइ मुझको न ठिकाना आए

कुछ वो मुबहम भी इशारे समझे
कुछ हमें बात बताना आए

अश्क गर उसके भिगो दें आरिज़
गुल को शबनम में नहाना आए

हमें रखना तो न आया तुझको
हमें दुनिया से उठाना आए

हम भी पीना शराब का सीखें
उनको आँखों से पिलाना आए

मीर तो बन 'गोबिन्द' तू लेकिन
इश्क़ का बार उठाना आए

غزل

پہلے اپنے کو بُھلانا آئے
تب اُسے دل میں بسانا آئے

ہوں اس نگاہ میں سرِ محفل
دیکھو جو راز چُھپانا آئے

کتنی جھوٹی ہے زندگی جس میں
موت بھی کر کے بہانہ آئے

دشت میں اپنے خیالوں کے پھروں
کوئی مجھ کو نہ ٹھکانہ آئے

کچھ وہ مبہم بھی اشارے سمجھے
کچھ ہمیں بات بتانا آئے

اشک گر اُس کے بھگو دیں عارض
گُل کو شبنم میں نہانا آئے

تجھے رکھنا تو نہ آیا ہمکو
ہمیں دنیا سے اُٹھانا آئے

ہم بھی پینا شراب کا سیکھیں
اُن کو آنکھوں سے پلانا آئے

میر تو بن گو بند تو لیکن
عشق کا بار اُٹھانا آئے

ग़ज़ल

वो आखिरी भी चोट कहीं सह चुका न हो।
ख़स्ता सा था मकान-ए-यक़ी ढह चुका न हो।।

समझेगा इस जहान की क्या मेहरबानियाँ।
जब तक ख़ुदा कुछ अर्सा यहाँ रह चुका न हो।।

दिल रख के अपना शक्ल-ए-सुख़न उनके सामने।
डरते हैं यही बात कोई कह चुका न हो।।

है जिस पे झिलमिलाने को उम्मीद की किरन।
वो आख़िरी भी अश्क कहीं बह चुका न हो।।

غزل

وہ آخری بھی چوٹ کہیں سہہ چکا نہ ہو
خستہ سا تھا مکانِ تقیں ڈھے چکا نہ ہو

سمجھے گا اِس جہان کی کیا مہربانیاں
جب تک خدا کچھ عرصہ یہاں رہ چُکا نہ ہو

دل رکھ کے اپنا شکل سخن ان کے سامنے
ڈرتے ہیں یہی بات کوئی کہہ چکا نہ ہو

ہے جس پہ جھلملانے کو اُمید کی کرن
وہ آخری بھی اشک کہیں بہہ چُکا نہ ہو

ग़ज़ल

जैसे कि एक नूर है पीछे छुपा हुआ
शिद्दत से अंधेरे की हमें ये शुभा हुआ

उनकी नज़र में शौक़ की परछाँई सी लगी
जैसे कि फ़ैसला हो कोई पर रुका हुआ

हस्ती का अपनी हुस्न नुमायाँ हुआ तो यूँ
जैसे महीन ओट में चहेरा ढका हुआ

पिछली तो रात हिज्र की इतनी तवील थी
लगता है हमें आज का सूरज थका हुआ

हमने कहा हो कुछ भी मगर देखना है ये
किस बात से हमारी उन्हें क्या गुमाँ हुआ

लगता है आज तारों भरा आसमान यूँ
जैसे दिखाए दिल कोई अपना दुखा हुआ

ज़िन्दा है उस हसीं का तसव्वुर यूँ आज तक
जैसे कि कोई घाव हो ताज़ा लगा हुआ

होता है सब जहान में जब उसके फ़ैज़ से
दुख दे के उसने ख़ुद ही बचाया तो क्या हुआ

'गोबिन्द' के कलाम का लौह-ए-जहान पर
लगता तो है निशान सा कुछ है मिटा हुआ

غزل

جیسے کہ اک نور ہے پیچھے چھپا ہوا
شدّت سے اندھیرے کی ہمیں یہ شبہ ہوا

ان کی نظر میں شوق کی پرچھائیں سی لگی
جیسے کہ فیصلہ ہو کوئی پر رُکا ہوا

ہستی کا اپنی حسن نمایاں ہوا تو یوں
جیسے مہین اوٹ میں چہرہ ڈھکا ہوا

پچھلی تو رات ہجر کی اتنی طویل تھی
لگتا ہے ہم کو آج کا سورج تھکا ہوا

ہم نے کہا ہو کچھ بھی مگر دیکھنا ہے یہ
کس بات سے ہماری اُنہیں کیا گماں ہوا

لگتا ہے آج تاروں بھرا آسمان یوں
جیسے دِکھائے دل کوئی اپنا دُکھا ہوا

زندہ ہے اُس ہنسی کا تصوّر یوں آج تک
جیسے کہ کوئی گھاؤ ہو تازہ لگا ہوا

ہوتا ہے سب جہاں میں جب اُس کے فیض سے
دُکھ دے کے اس نے خود ہی بچایا تو کیا ہوا

گوبند کے کلام کا لوحِ جہان پر
لگتا تو ہے نشان سا کچھ ہے مٹا ہوا

ग़ज़ल

.ख़याालों की दुनिया बेहालों की दुनिया
परेशान और पायमालों की दुनिया

घरौंदों में रहते परी देश जाते
ग़रीबों के उन नौनिहालों की दुनिया

हो हसरत में बच्चे की जैसे खिलौना
तख़य्युल में मेरे विसालों की दुनिया

किसी के सितम को करम मानने तक
ज़हन के बहुत से कमालों की दुनिया

बोहत घुटते लफ़्ज़ों की हद पर मआनी
अगरचे न होती मिसालों की दुनिया

शमा जल के समझी के रौशन है कितनी
जो अंदर है उसके उजालों की दुनिया

मुहब्बत में 'गोबिन्द' निगह-ए-करम की
है मुफ़लिस की जैसे निवालों की दुनिया

غزل

خیالوں کی دنیا بے حالوں کی دنیا
پریشان اور پائمالوں کی دُنیا

گھروندوں میں رہتے پری دیس جاتے
غریبوں کے ان نونہالوں کی دنیا

ہو حسرت میں بچے کے جیسے کھلونا
تخیّل میں میرے وِصالوں کی دنیا

کسی کے سِتم کو کرم ماننے تک
ذہن کے بہت سے کمالوں کی دنیا

بہت گھٹتے لفظوں کی حد پر معنی
اگرچہ نہ ہوتی مِثالوں کی دُنیا

شمع جل کے سمجھی کہ روشن ہے کتنی
جو اندر رہے اُس کے اُجالوں کی دُنیا

محبّت میں گو تند نِگاہِ کرم کی
ہے مُفلِس کی جیسے نِوالوں کی دُنیا

ग़ज़ल

सुनते हैं आवाज़ है एक पर कभी आई नहीं
देखते हैं अब भी सूरत उसने दिखलाई नहीं

जा रही है वो भी अब तो ज़िन्दगी जिसको कि हम
सोचते थे ठीक से हमने अभी पाई नहीं

उसने ही अपनी और मेरी दोनों की चालें चलीं
जो हुई है मात मुझको मैंने वो खाई नही

हमसफ़ीरों की है मुझसे रसमिया अब गुफ़्तगू
इससे बढ़के भी जहाँ में कोई तनहाई नहीं

मुन्तज़िर थे जिसके बरसों वो गई आके बहार
दिल के गुलशन में कली तो कोई मुस्काई नहीं

छोड़ दो फ़रियाद करना सर पटकना ऐ 'गोबिन्द'
इस बयाबाँ में किसी की कोई सुनवाई नहीं

غزل

سنتے ہیں آواز ہے اک پر کبھی آئی نہیں
دیکھتے ہیں اب بھی صورت اُس نے دکھلائی نہیں

جا رہی ہے وہ بھی اب تو زندگی جس کو کہ ہم
سوچتے تھے ٹھیک سے ہم نے ابھی پائی نہیں

اس نے ہی اپنی و میری دونوں کی چالیں چلیں
جو ہوئی ہے مات مجھکو میں نے وہ کھائی نہیں

ہم سفیروں کی ہے مجھ سے رسمیہ اب گفتگو
اس سے بڑھ کر بھی جہاں میں کوئی تنہائی نہیں

منتظر تھے جس کے برسوں وہ گئی آ کے بہار
دل کے گلشن میں کلی تو کوئی مسکائی نہیں

چھوڑ دو فریاد کرنا سر پٹکنا اے گوبند
اس بیاباں میں کسی کی کوئی سنوائی نہیں

ग़ज़ल

वो लमहे याद में अकसर उभर गए जैसे
उतरती धूप में साए निखर गए जैसे

गई है छूती हुई सी वो नज़र यूँ दिल को
हम अपने पास से हो कर गुज़र गए जैसे

घुटन अजीब सी तनहाई में महसूस हुई
ख़याल वस्ल के घबरा के फिर उधर गए जैसे

यूँ ख़ुश्क जाम में आई शराब-ए-तर ढल कर
फिर अपनी आँख में आँसू हों भर गए जैसे

ये चेहरा आइने में ऐसा पुरसुकून लगा
हम अपने आप को दिखला के मर गए जैसे

यूँ ख़ाली दश्त में गूँजा है सुर पपीहे का
वो दिल में टीस सी बन कर उतर गए जैसे

उन्होंने मिलने का पुरज़ोर कर दिया वादा
सुकूँ भी ग़म से मुलाक़ात कर गए जैसे

शब-ए-फ़िराक़ ऐ गोबिन्द वस्ल के धोखे
सँवर सवँर के वो गेसू बिखर गए जैसे

غزل

وہ لمحے یاد میں اکثر اُبھر گئے جیسے
اُترتی دھوپ میں سائے نکھر گئے جیسے

لگی ہے چھوتی ہوئی سی وہ نظر یوں دِل کو
ہم اپنے پاس سے ہو کر گزر گئے جیسے

گھٹن عجیب سی تنہائی میں محسوس ہوئی
خیالِ وصل کے گھبرا کے پھر اُدھر گئے جیسے

یوں خشک جام میں آئی شرابِ تر ڈھل کر
پھر اپنی آنکھ میں آنسو ہوں بھر گئے جیسے

یہ چہرہ آئینے میں ایسا پُرسکون لگا
ہم اپنے آپ کو دِکھلا کے مر گئے جیسے

یوں خالی دشت میں گونجا ہے شور پہیئے کا
وہ دل میں ٹیس سی بن کر اُتر گئے جیسے

انہوں نے ملنے کا پُرزور کر دیا وعدہ
سکوں بھی غم سے مُلاقات کر گئے جیسے

شبِ فراق اے گوبند وصل کے دھوکے
سنور سنور کے وہ گیسو بکھر گئے جیسے

ग़ज़ल

हर चीज़ जो असल में है मुझको वही लगे
लगता है ये जो ख़्वाब सा ये ज़िन्दगी लगे

ऐ काश इश्क़ दे के दिल से खेलने वाले
दिल का लगाना मुझको भी एक दिल्लगी लगे

अपने जहाँ को भूल ही जाऊँ मैं ऐ ख़ुदा
तेरे जहाँ में इतना तो मेरा न जी लगे

तनहाई मेरी कम हो बहुत इस जहान में
बस मुझको मुझसा एक कोई आदमी लगे

जैसे लगी है जा के ज़मीं आसमान से
सीने से मेरे उसका भी सीना कभी लगे

एहसास-ए-खुदी फाँस सी वो नीम नज़र है
चुभ के निकल भी जाए प मन में चुभी लगे

मुश्किल है ये कि दिल को वो महबूब चाहिए
अपना नहीं लगे जो कभी और कभी लगे

'गोबिन्द' गरचे देखे ख़ुदा मेरी नज़र से
उसको भी अपने काम में काफ़ी कमी लगे

غزل

ہر چیز جو اصل میں ہے مجھکو وہی لگے
لگتا ہے یہ جو خواب سا یہ زندگی لگے

اے کاش عشق دے کے دل سے کھیلنے والے
دل کا لگانا مجھکو بھی ایک دل لگی لگے

اپنے جہاں کو بھول ہی جاؤں میں اے خدا
تیرے جہاں میں اتنا تو میرا نہ جی لگے

تنہائی میری کم ہو بہت اس جہان میں
بس مجھکو مجھ سا ایک کوئی آدمی لگے

جیسے لگی ہے جا کے زمیں آسماں سے
سینے سے میرے اس کا بھی سینہ کبھی لگے

احساسِ خودی پھانس سی وہ نیم نظر ہے
چبھ کے نکل بھی جائے پہ من میں چبھی لگے

مشکل ہے یہ کہ دل کو وہ محبوب چاہیئے
اپنا نہیں لگے جو کبھی اور کبھی لگے

گو بند گرچہ دیکھے خدا میری نظر سے
اُس کو بھی اپنے کام میں کافی کمی لگے

ग़ज़ल

सूरतों में सूरतें सी देखता जाता हूँ मैं
मुद्दतों यूँही .ख़ला को घूरता जाता हूँ मैं

उसको पाना हो रहा है .ख़ुद को पाने की तरह
अपने घर का रास्ता .ख़ुद पूछता जाता हूँ मैं

वो उबारेगा यक़ीनन इश्क़ के दरियाह से
जितना लाता है किनारे डूबता जाता हूँ मैं

एक रिश्ता लग रहा है उसकी हर एक चीज़ से
गिर रहा है शाख़ से गुल टूटता जाता हूँ मैं

जब से लुत्फ़ आने लगा है ज़िन्दगी के जाम में
इसका देने वाला भी है भूलता जाता हूँ मैं

जितना अपने आइने के सामने आता है वो
उतना अपने आइने में दीखता जाता हूँ मैं

साए में उन भीगी पलकों के जो मै रखता हूँ दिल
ओस गिरती है कमल पर भीगता जाता हूँ मैं

ताकि उनके नक्श-ए-पा जितने हैं सारे चूम लूँ
बन के पुरवाई ज़मीं पर लोटता जाता हूँ मैं

ख़ुद को लगता है कि जैसे ढक रहा हूँ मैं 'गोबिन्द'
परदा जैसे रू.ख से उसके खोलता जाता हूँ मैं

غزل

صورتوں میں صورتیں سی دیکھتا جاتا ہوں میں
مدتوں یوں ہی خلا کو گھورتا جاتا ہوں میں

اس کو پانا ہو رہا ہے خود کو پانے کی طرح
اپنے گھر کا راستہ خود پوچھتا جاتا ہوں میں

وہ اُبھارے گا یقیناً عشق کے دریا سے
جتنا لاتا ہے کنارے ڈوبتا جاتا ہوں میں

ایک رشتہ لگ رہا ہے اُس کی ہر ایک چیز سے
گر رہا ہے شاخ سے گُل ٹوٹتا جاتا ہوں میں

جب سے لُطف آنے لگا ہے زندگی کے جام میں
اِس کا دینے والا بھی ہے بھولتا جاتا ہوں میں

جتنا اپنے آئینے کے سامنے آتا ہے وہ
اُتنا اپنے آئینے میں دیکھتا جاتا ہوں میں

سائے میں اُن بھیگی پلکوں کے جو میں رکھتا ہوں دل
اوس گرتی ہے کنول پر بھیگتا جاتا ہوں میں

تاکہ اُن کے نقشِ پا جتنے ہیں سارے چُوم لوں
بن کے پُروائی زمیں پر لوٹتا جاتا ہوں میں

خود کو لگتا ہے کہ جیسے ڈھک رہا ہوں میں گو بند
پردہ جیسے رُخ سے اس کے کھولتا جاتا ہوں میں

वही जोशो जुनूँ मय के समाँ मस्ताना लगता है
हमें तो आशिक़ी में दैर भी मैख़ाना लगता है

पिलाता जा मुझे ऐ साक़िया भर भर के ख़ुम तब तक
मुझे रिन्दों में जब तक कोई भी बेगाना लगता है

न जाने इल्म है ये सब या है दीवानगी अपनी
भला दीवाना भी ख़ुद को कभी दीवाना लगता है

बहुत महसूस होता है करम मुझको उन आखों का
लबों से आ के जब मेरे कोई पैमाना लगता है

वो कहते हैं कि मर कर फिर यहीं पर आओगे वापस
वगरना सबसे आसाँ तो हमें मर जाना लगता है

बिता दे शम्मा के नज़दीक चाहे ज़िन्दगी सारी
शमा को जल के गिरता है तभी परवाना लगता है

ये कैसे पास आए हैं न जाने अब के हम दोनों
कि उसका सामने आना मेरा छुप जाना लगता है

लगे कुछ इस तरह शायद विसाल-ए-यार में हमको
समन्दर में नदी को जिस तरह मिल जाना लगता है

वो मंज़िल जानकारी की तुम्हें मिल जाएगी लेकिन
वहाँ 'गोबिन्द' अपना चेहरा भी अनजाना लगता है

غزل

وہی جوشِ جنوں ہیں کہ سماں مستانہ لگتا ہے
ہمیں تو عاشقی میں دیر بھی میخانہ لگتا ہے

پلاتا جا مجھے اے ساقیا بھر بھر کے خُم نب تک
مجھے رِندوں میں جب تک کوئی بھی بیگانہ لگتا ہے

نہ جانے علم ہے یہ سب یا ہے دیوانگی اپنی
بھلا دیوانہ بھی خود کو کبھی دیوانہ لگتا ہے

بہت محسوس ہوتا ہے کرم مجھکو اُن آنکھوں کا
لبوں سے آ کے جب میرے کوئی پیمانہ لگتا ہے

وہ کہتے ہیں کہ مر کر پھر یہیں پر آؤ گے واپس
وگرنہ سب سے آساں تو ہمیں مرجانا لگتا ہے

بتادے شمع کے نزدیک چاہے زندگی ساری
شمع کو جل کے گرتا ہے تبھی پروانہ لگتا ہے

یہ کیسے پاس آئے ہیں نہ جانے اب کے ہم دونوں
کہ اُس کا سامنے آنا میرا چھپ جانا لگتا ہے

لگے کچھ اس طرح شائد وصالِ یار میں ہمکو
سمندر میں ندی کو جس طرح مل جانا لگتا ہے

وہ منزل جانکاری کی تمہیں مل جائے گی لیکن
وہاں گو بندہ اپنا چہرہ بھی انجانا لگتا ہے

ज़िन्दगी के बीतने को एक सपना चाहिए
सर-टिकाने के लिए कोई एक तकिया चाहिए

वो कहाँ से वक़्त लाए हमसे मिलने का कभी
.खुद से मिलने को अबद को एक लमहा चाहिए

जानता हूँ हश्र जो होना है अब मंजधार में
पर सहारा डूबते का मुझको तिनका चाहिए

जाने कब से सुन रहा हूँ दिल के सन्नाटे के सुर
इन सुरों को जिस्म दे जो ऐसा नग़मा चाहिए

तू बनाकर एक दुनिया मुतमइन होगा .खुदा
तेरे हर बन्दे को अपनी एक दुनिया चाहिए

दे रहा है क्यों अलग उनवान हर वाक़े को तू
हमको पूरी दास्ताँ का एक उनवाँ चाहिए

क्या पता इन्सान से भी काम पड़ जाए कभी
ऐ .खुदा कुछ रास्ता हमसे भी रखना चाहिए

कह रहे है सच्चे सुर संगीत से एक राज़ को
साज़ के पर्दों में वो रूपोश मिलना चाहिए

घूरते हो आइने में अजनबी को क्या 'गोबिन्द'
शक्ल अपनी देखने को चेहरा अपना चाहिए

غزل

زندگی کے بیتنے کو ایک سپنا چاہیئے
سر ٹِکانے کے لیئے کوئی ایک تکیہ چاہیئے

وہ کہاں سے وقت لائے ہم سے مِلنے کا کبھی
خود سے مِلنے کو عبد کو ایک لمحہ چاہیئے

جانتا ہوں حشر جو ہونا ہے اب منجھدار میں
پر سہارا ڈوبتے کا مجھکو تنِکا چاہیئے

جانے کب سے سُن رہا ہوں دل کے سنّاٹے کے سُر
اِن سُروں کو جسم دے جو ایسا نغمہ چاہیئے

تُو بنا کر ایک دُنیا مطمئن ہو گا خُدا
ترے ہر بندے کو اپنی ایک دُنیا چاہیئے

دے رہا ہے کیوں الگ عنوان ہر واقعہ کو تُو
ہم کو پوری داستاں کا ایک عنواں چاہیئے

کیا پتہ انسان سے بھی کام پڑ جائے کبھی
اے خدا کچھ راستہ ہم سے بھی رکھنا چاہیئے

کہہ رہے ہیں سچے سُر سنگیت سے ایک راز کو
ساز کے پردوں میں وہ روپوش مِلنا چاہیئے

گھورتے ہو آئینے میں اجنبی کو کیا گو بند
شکل اپنی دیکھنے کو چہرہ اپنا چاہیئے

यूँ लगा है मुझको जैसे दिल में कोई आ गया
रूह को नग़मा बना कर तन बदन में गा गया

इस तरह से ख़्वाहिशें लगता है पूरी हो गईं
जैसे कोई उम्र क़ैदी ख़्वाब में घर आ गया

थी फ़लक़ पर चश्म-ए-पुरनम हाथ में था ख़ाली जाम
एक बादल मय का देखा आसमाँ पर छा गया

हो गया जब दिल सवाली खो के आँखों में तेरी
बारगाह-ए-पीर का भूले से रस्ता पा गया

पड़ गई मुझ पर निगाह-ए-पाक उसकी इस तरह
जैसे कोई भर के गागर गंगाजल की ना गया

करके तू तू मेरे मैं को तेरे तू ने खा लिया
या मेरा मैं करके मैं मैं तेरे तू को खा गया

रुठ कर अब पहले जैसा वो बिगड़ता भी नहीं
जबसे ये अंदाज उसका मेरे मन को भा गया

शुक्र है वो जा रहा है पर हमारा होगा क्या
एक जलवा जाते जाते और गर दिखला गया

तुम ये कहते हो समझने का नहीं सौदा 'गोबिन्द'
हम तो समझे थे कि अब अपनी समझ में आ गया

غزل

یوں لگا ہے مجھکو جیسے دل میں کوئی آگیا
روح کو نغمہ بنا کر تن بدن میں گا گیا

اس طرح سے خواہشیں لگتا ہے پوری ہو گیئں
جیسے کوئی عمر قیدی خواب میں گھر آگیا

تھی فلک پر چشم پُر نم ہاتھ میں تھا خالی جام
ایک بادل مے کا دیکھا آسماں پر چھا گیا

ہو گیا جب دل سوالی کھو کے آنکھوں میں تیری
بارگاہِ پیر کا بھولے سے رستہ پا گیا

پڑ گئی مجھ پر نگاہِ پاک اُس کی اِس طرح
جیسے کوئی بھر کے گاگر گنگا جل کی نا گیا

کر کے تو تو، میرے میں کو تیرے تو نے کھا لیا
یا میرا میں کر کے میں میں تیرے تُو کو کھا گیا

روٹھ کر اب پہلے جیسا وہ بگڑتا بھی نہیں
جب سے یہ انداز اُس کا میرے من کو بھا گیا

شُکر ہے وہ جا رہا ہے پر ہمارا ہو گا کیا
ایک جلوہ جاتے جاتے اور گردِ کھلا گیا

تم یہ کہتے ہو سمجھنے کا نہیں سودا گو بندر
ہم تو سمجھے تھے کہ اب اپنی سمجھ میں آگیا

जब भी तेरे हुज़ूर में शिकवा लिए गये
कुछ फ़लसफ़े जवाब में समझा दिये गये

रोये बहुत कि कुछ यहाँ होता हैं क्यों नहीं
तो फिर किसी उम्मीद पर बहला दिये गये

क्या होगा रहमतों पे तेरी उनका भरोसा
मंज़िल पे भी पहुँच के जो लौटा दिये गये

देखा कि जिनकी नीचे भी थी सख़्त ज़रूरत
ऊपर वो ज़रा जल्दी ही बुलवा लिए गये

बनवा दिये गये थे महल पहले ख़्वाब में
अब एक एक करके वो गिरवा दिये गये

वो क्या मिलेगा अब हमें जिसकी तलाश है
अब तो सभी से बज़्म में मिलवा दिये गये

दीदार हमें मिलता जो कुछ तेरे हुस्न का
क्यों लगता कि बेमौत ही मरवा दिये गये

या तो जगा दे नींद से या ऐसा कर निज़ाम
कि चाहे जो ख़्वाब हमने वो दिखला दिये गये

पुर-पेंच गेसुओं से है पुर-लुत्फ़ ज़िन्दगी
'गोबिन्द' ये न हो कि ये सुलझा दिये गये

غزل

جب بھی تیرے حضور میں شکوہ لیئے گئے
کچھ فلسفے جواب میں سمجھا دیئے گئے

روئے بہت کہ کچھ یہاں ہوتا ہے کیوں نہیں
تو پھر کسی امید پر بہلا دیئے گئے

کیا ہو گا رحمتوں پہ تیری ان کا بھروسہ
منزل پہ بھی پہنچ کے جو لوٹا دیئے گئے

دیکھا کہ جن کی بیچ بھی تھی سخت ضرورت
اوپر وہ ذرا جلدی ہی بلوا لیئے گئے

بنوا دیئے گئے تھے محل پہلے خواب میں
اب ایک ایک کر کے وہ گروا دیئے گئے

وہ کیا ملے گا اب ہمیں جس کی تلاش ہے
اب تو سبھی سے بزم میں ملوا دیئے گئے

دیدار ہمیں ملتا جو کچھ تیرے حُسن کا
کیوں لگتا کہ بے موت ہی مروا دیئے گئے

یا تو جگا دے نیند سے یا ایسا کر نظام
کر چاہے جو خواب ہم نے وہ دکھلا دیئے گئے

پُر پیچ گیسوؤں سے ہے پُر لُطف زندگی
گو تبند یہ نہ ہو کہ یہ سلجھا دیئے گئے

रात भर करवटें बदलना है
तब कहीं जाके दिन निकलना है

हो चुका जो भी हमसे होना था
अब तो रोना है हाथ मलना है

है बुरा वक़्त कोई मौत नहीं
एक दिन इसको सर से टलना है

ज़िन्दगी क्या है गोल रस्ते पर
थकते जाना है और चलना है

इत्तेफ़ाक़न है मेरा दिल वर्ना
दर्द को भी कहीं तो पलना है

उसकी फ़ितरत में है छुपे रहना
दिल की तक़दीर में मचलना है

दरमियाँ मयकदे और काबे के
लड़खाड़ाना है और संभलना है

कोई देखे न पलट कर फिर से
अब तो हमको यहाँ से चलना है

बीतना धर्म वक़्त का 'गोबिन्द'
जैसे के बर्फ़ का पिघलना है

غزل

رات بھر کروٹیں بدلنا ہے
تب کہیں جا کے دن نکلنا ہے

ہو چکا جو بھی ہم سے ہونا تھا
اب تو رونا ہے ہاتھ ملنا ہے

ہے بُرا وقت کوئی موت نہیں
ایک دن اس کو سر سے ٹلنا ہے

زندگی کیا ہے گول رستے پر
تھکتے جانا ہے اور چلنا ہے

اتفاقاً ہے میرا دل ورنہ
درد کو بھی کہیں تو پلنا ہے

اُس کی فطرت میں ہے چُھپے رہنا
دل کی تقدیر میں مچلنا ہے

درمیاں میکدے اور کعبے کے
لڑکھڑانا ہے اور سنبھلنا ہے

کوئی دیکھے نہ پلٹ کر پھر سے
اب تو ہم کو یہاں سے چلنا ہے

بیتنا دھرم وقت کا گو بند
جیسے کہ برف کا پگھلنا ہے

तेरी ज़ुल्फ़ थी तो सवँर गई मेरे .ख़्वाब थे तो बिखर गए
तेरे अद्ल के जो उसूल थे मेरे वक़्त पर वो किधर गए

लगे जिस तरफ़ को इशारे वो उसी सिम्त हम तो गए मगर
न वो मंज़िलें ही वहाँ मिलीं न वो रास्ते ही उधर गए

हुई बात आँखों ही आँखों में य वो बात भी कोई बात थी
हमें बात कोई न कहने दी औ वो बात कह के मुकर गए

वो तो आए मेरे .ख़्याल में जैसे बर्क़ आए सहाब में
रगें फुक गईं मेरे ध्यान की वो जहाँ जहाँ से गुज़र गए

अभी वीराँ ने मेरे दिल के जो एक अलविदा की सदा सुनी
कई क़ाफ़िले मेरी यादों के वहीं थरथरा के ठहर गए

कभी ध्यान में वो मिले नहीं क्योंकि अपना ध्यान हमें रहा
हमें मिल भी जाएँगे .ख़ुद के हम कभी ध्यान से जो उतर गए

कोई लाख रोकेगा निकहतें वो नसीम में तो मिलेंगी ही
मिले उससे जा के 'गोबिन्द' जो कहा लोगों ने कि वो मर गए

غزل

تیری زلف تھی تو سنور گئی میرے خواب تھے تو بکھر گئے
ترے عدل کے جو اصول تھے میرے وقت پر وہ کدھر گئے

لگے جس طرف کو اشارے وہ اسی سمت ہم تو گئے مگر
نہ وہ منزلیں ہی وہاں ملیں نہ وہ راستے ہی ادھر گئے

ہوئی بات آنکھوں ہی آنکھوں میں پہ وہ بات بھی کوئی بات تھی
ہمیں بات کوئی نہ کہنے دی، او وہ بات کہہ کے مُکر گئے

وہ تو آئے میرے خیال میں جیسے برق آئے سحاب میں
رگیں پھُک گئیں میرے دھیان کی وہ جہاں جہاں سے گذر گئے

ابھی ویراں تے میرے دل کہ جو ایک الوداع کی صدا سُنی
کئی قافلے میری یادوں کے وہیں تھرتھرا کے ٹھہر گئے

کبھی دھیان میں وہ ملے نہیں کیوں کہ اپنا دھیان ہمیں رہا
ہمیں مل بھی جائیں گے خود کہ ہم کبھی دھیان سے جو اتر گئے

کوئی لاکھ رو کے گا نکہتیں وہ نسیم میں تو ملیں گی ہی
ملے اُس سے جا کے گوبند جو کہا لوگوں نے کہ وہ مر گئے

हमने जब कुछ जहाँ में पाया है
कुछ न कुछ साथ में गँवाया है

लगता है दिल है अकेला फिर से
उसका जो लब पे नाम आया है

जान लेते जो बेखुदी अपनी
हमको कब इतना होश आया है

फिर उठी हाय वो नज़र जिससे
हमने अकसर फ़रेब खाया है

जैसे गुज़रे हवा बग़ीचे से
उसका दिल में ख़्याल आया है

जाने क्यों वो सलाम पर मेरे
आज शर्मा के मुस्कुराया है

मस्त हैं आँख के पियालों से
जाने क्या आपने पिलाया है

आया बुझने को अब दिया दिल का
रात भर यूँही टिमटिमाया है

वो फ़ैज़ तेरे सुखन में 'गोबिन्द'
एक अपना ही रंग लाया है

غزل

ہم نے جب کچھ جہاں میں پایا ہے
کچھ نہ کچھ ساتھ میں گنوایا ہے

لگتا ہے دل ہے اکیلا پھر سے
اُس کا جو لب پہ نام آیا ہے

جان لیتے جو بے خودی اپنی
ہم کو کب اتنا ہوش آیا ہے

پھر اُٹھی ہائے وہ نظر جس سے
ہم نے اکثر فریب کھایا ہے

جیسے گذرے ہوا بغیچے سے
اُس کا دل میں خیال آیا ہے

جانے کیوں وہ سلام پر میرے
آج شرما کے مسکرایا ہے

مست ہیں آنکھ کے پیالوں سے
جانے کیا آپ نے پلایا ہے

آیا بُجھنے کو اب دیا دل کا
رات بھر یوں ہی ٹمٹمایا ہے

وہ فیض تیرے سُخن میں گو ہے بند
ایک اپنا ہی رنگ لایا ہے

बातों में हम जो एक दिन वो बात ले आए
फ़ौरन ही उस निगाह में कुछ फ़ासले आए

मंतिक़ को देखा दूर खड़े डरते हुए चुप
जब पेश-ए-अक़्ल दिल के कभी मामले आए

बेहतर ही रहे अच्छों से मेरे ख़राब दिन
मजबूर करके लब पे तेरा नाम ले आए

कल कितना रोए चाँद सितारों के सामने
फिर अपने साथ आज वही शाम ले आए

जैसे कि उनके सीने पे सीना मेरा लगे
काँटों के सर पे पाँव के यूँ आबले आए

जब भी सुफ़ैद चेहरा हुआ मेरा खौफ़ से
मेरी मदद को भाग के वो साँवले आए

जब भी गए तो पूरे थे होशो हवास में
हर बार तेरी बज़्म से हम बावले आए

उसने कहा सवाद कोई ग़म का चख के दे
'गोबिन्द' अपने वास्ते ये काम ले आए

غزل

باتوں میں ہم جو ایک دن وہ بات لے آئے
فوراً ہی اُس نگاہ میں کچھ فاصلے آئے

منطق کو دیکھا دور کھڑے ڈرتے ہوئے چُپ
جب پیشِ عقل دل کے کبھی معاملے آئے

بہتر ہی رہے اچھوں سے میرے خرابؔ دن
مجبور کر کے لب پہ ترا نام لے آئے

کل کتنا روئے چاند ستاروں کے سامنے
پھر اپنے ساتھ آج وہی شام لے آئے

جیسے کہ ان کے سینے پہ سینہ میرا لگے
کانٹوں کے سر پہ پاؤں کے یوں آبلے آئے

جب بھی سفید چہرا ہوا میرا خوف سے
میری مدد کو بھاگ کے وہ سانولے آئے

جب بھی گئے تو پورے تھے ہوش و ہواس میں
ہر بار تیری بزم سے ہم باؤلے آئے

اس نے کہا سُوادؔ کوئی غم کا چکھ کہ دے
گو بندا اپنے واسطے یہ کام لے آئے

एक पल बिन मेहर जिसकी जिस्म-ओ जाँ रहते नहीं
हम तो अब उस मेहरबाँ को मेहरबाँ कहते नहीं

है भरोसा इतना उसकी बेरूख़ी पर अब हमें
अश्क जो उमड़े भी दिल में आँख से बहते नहीं

शिकवे अब भी पूछते हैं हमको हैं किस बात के
हर तरह से कह चुके अब हम तो कुछ कहते नहीं

पढ़ के ख़त मेरा हँसे और कहते हैं बस रख लिया
कोई तो थी बात वर्ना कुछ न कुछ कहते नहीं

बच गए उनकी नज़र से बर्क़ के धोखे में हम
जानते उनकी नज़र है फिर तो हम रहते नहीं

डर है हमको इस जहाँ में आपकी रुसवाई का
वर्ना ताने दुनिया भर के इस तरह सहते नहीं

ग़म के गारे से इमारत दिल की पक्की हो गई
बाढ़ में बदवक़्त की 'गोबिन्द' अब ढहते नहीं

غزل

اک پل بن مہر جس کی جسم و جاں رہتے نہیں
ہم تو اب اس مہرباں کو مہرباں کہتے نہیں

ہے بھروسہ اتنا اس کی بے رُخی پر اب ہمیں
اشک جو امڈے بھی دل میں آنکھ سے بہتے نہیں

شکوہ اب بھی پوچھتے ہیں ہم کو ہے کس بات کا
ہر طرح سے کہہ چکے اب ہم تو کچھ کہتے نہیں

پڑھ کے خط میرا ہنسے اور کہتے ہیں بس رکھ لیا
کوئی تو تھی بات ورنہ کچھ نہ کچھ کہتے نہیں

بچ گئے اُن کی نظر سے برق کے دھوکے میں ہم
جانتے اُن کی نظر ہے پھر تو ہم رہتے نہیں

ڈر ہے ہم کو اس جہاں میں آپ کی رسوائی کا
ورنہ طعنے دنیا بھر کے اس طرح سہتے نہیں

غم کے گارے سے عمارت دل کی پکّی ہو گئی
بار ڈھ میں بد وقت کی گو بند اب ڈھتے نہیں

ग़ज़ल

ये जो हमें जहान में एहसास-ए-ग़म हुआ
लिखते हैं इसको हाथ में जब भी क़लम हुआ

बचते कहाँ हैं लोग मुहब्बत में आप की
वर्ना बयान होता जो उन पर सितम हुआ

देखा जो हमने आपकी ताक़त को बेशऊर
थोड़ा जो ऐतक़ाद था वो भी ़खतम हुआ

इसको ही आप कहते है मूसीक़ी आज की
कल रात भर जो पी के यहाँ पर उधम हुआ

ज़ालिम हैं आजकल तो निगहबाँ बने हुए
जो भी हुआ हो ज़ुल्म समझिए कि कम हुआ

शबनम को देख याद हमें आ गया है कुछ
दामन इसी से दिल का लगा है कि नम हुआ

जल्दी है क्या पड़े तो हुए हैं जहान में
मिल लेगा वो बुला के कभी उसका मन हुआ

ऐ जाँ बचाने वाले तुझे क्या बतायें हम
मरने का जो नहीं था वो जीने का ग़म हुआ

देखा जो हमने आइना 'गोबिन्द' इस दफ़ा
वो सामने है ऐसा कुछ हमको भरम हुआ

غزل

یہ جو ہمیں جہاں میں احساسِ غم ہوا
لکھتے ہیں اُس کو ہاتھ میں جب بھی قلم ہوا

بچتے کہاں ہیں لوگ محبّت میں آپ کی
ورنہ بیان ہوتا جو اُن پر سِتم ہوا

دیکھا جو ہم نے آپ کی طاقت کو بے شعور
تھوڑا جو اعتقاد تھا وہ بھی ختم ہوا

اِس کو ہی آپ کہتے ہیں موسیقی آج کی
کل رات بھر جو پی کے یہاں پر اُدھم ہوا

ظالم ہے آج کل تو نگہ بال بنے ہوئے
جو بھی ہوا ہو ظلم سمجھیئے کہ کم ہوا

شبنم کو دیکھ یاد ہمیں آ گیا ہے کچھ
دامن اِسی سے دل کا لگا ہے کہ نم ہوا

جلدی ہے کیا پڑے تو ہوئے ہیں جہان میں
مِل لے گا وہ بُلا کے کبھی اس کا مَن ہوا

دیکھا جو ہم نے آئینہ گو بند اس دفعہ
وہ سامنے ہے ایسا کچھ ہم کو بھرم ہوا

ग़ज़ल

ग़म ने सुई में दर्द की जब दिल पिरो लिया
अश्कों के हार बन गए और मैं भी रो लिया

उस दिल का क्या भरोसा भले वक़्त की तरह
इसका था गरचे आज तो कल उसका हो लिया

जब देखा छू के जाना है उस गुलबदन को आज
बाद-ए-सबा ने हाथ मूँ शबनम से धो लिया

कहते हैं इससे निकलेंगी काटों की झाड़ियाँ
जब हमने दिल के बाग़ में वो बीज बो लिया

इन्सान का ये काम है जीवन मरन के बीच
उस पार जा के दे दिया इस पार जो लिया

ये एक वफ़ा की बात नहीं अपना है जुनून
रस्ता जो सबने तर्क किया हमने वो लिया

वैसे तो नाम अपने ही क़ातिल का प्यार से
लेते नहीं हैं लोग मगर हमने तो लिया

तय हमने किया चैन से जन्मों का सफ़र यूँ
पाया जो जिस जहान में उस ही में खो लिया

'गोबिन्द' मुन्तेज़िर हैं एक निगह-ए-करम के हम
अब जागे अपना भाग भी इतना तो सो लिया

غم نے سوئی میں درد کی جب دل پرولیا
اشکوں کے ہار بن گئے اور میں بھی رولیا

اُس دل کا کیا بھروسہ بھلے وقت کی طرح
اِس کا تھا گرچہ آج تو کل اس کا ہولیا

جب دیکھا چھو کے جانا ہے اس گُل بدن کو آج
بادِ صبا نے ہاتھ منہ شبنم سے دھولیا

کہتے ہیں اِس سے نکلیں گی کانٹوں کی جھاڑیاں
جب ہم نے دل کے باغ میں وہ بیج بولیا

انسان کا یہ کام ہے جیون مرن کے بیچ
اُس پار جا کے دیدیا اس پار جولیا

یہ ایک وفا کی بات نہیں اپنا ہے جنوُن
رستہ جو سب نے ترک کیا ہم نے وہ لیا

ویسے تو نام اپنے ہی قاتل کا پیار سے
لیتے نہیں ہیں لوگ مگر ہم نے تو لیا

طے ہم نے کیا چین سے جنموں کا سفر یوں
پایا جو جس جہان میں اس ہی میں کھولیا

گو ہیں منتظر ہیں ایک نگہِ کرم کے ہم
اب جاگے اپنا بھاگ بھی اتنا تو سولیا

ग़ज़ल

काश उसने न मुझे इतना सताया होता
झीने परदे से न रुखसार छिपाया होता

वो जो कुछ देता इशारा भी हमें अपना तो
हमने एक जन्म न बेकार गँवाया होता

अब ये लगता है कि .ख्वाबों में सही
हाल-ए-दिल हमने कभी उसको सुनाया होता

है करम हम पे ये उसका कि रहे अच्छे नहीं
अच्छे रहते जो कभी दिल न लगाया होता

हमको अपना कभी ग़लती से समझकर उसने
दिल का अपने भी कोई राज़ बताया होता

उसको होता जो कभी रुख़ से उठाना पर्दा
मेरा .खुद पर से यक़ीं यूँ न उठाया होता

साज़ेदिल मेरा बजाना था जो सुर में उसको
उसकी तरबों को तो एक बार मिलाया होता

मिलना गर था उसे 'गोबिन्द' कभी मुझसे तो
मुझे .खुद से तो कभी पहले मिलाया होता

غزل

کاش اس نے نہ مجھے اتنا ستایا ہوتا
جھینے پردے سے نہ رخسار چھپایا ہوتا

وہ جو کچھ دینا اشارہ بھی ہمیں اپنا تو
ہم نے ایک جنم نہ بیکار گنوایا ہوتا

اب یہ لگتا ہے کہ خوابوں میں سہی
حالِ دل ہم نے کبھی اس کو سُنایا ہوتا

ہے کرم ہم پہ یہ اُس کا کہ رہے اچھے نہیں
اچھے رہتے جو کبھی دل نہ لگایا ہوتا

ہم کو اپنا کبھی غلطی سے سمجھ کر اُس نے
دل کا اپنے بھی کوئی راز بتایا ہوتا

اس کو ہوتا جو کبھی رخ سے اٹھانا پردہ
میرا خود پر سے یقین یوں نہ اُٹھایا ہوتا

سازِ دل میرا بجانا تھا جو سُر میں اس کو
اس کی طربوں کو تو ایک بار ملایا ہوتا

ملنا گر تھا اسے گو بند کبھی مجھ سے تو
مجھے خود سے تو کبھی پہلے ملایا ہوتا

ग़ज़ल

चला जो ग़म से मेरे तेरा काम चलता है
दिखा जहाँ को तेरा यूँ निज़ाम चलता है

मेरे भी घर का तू अब तो पता मुझे दे दे
ज़माना शाम को सू-ए-क़याम चलता है

हमारे जिस्म में अब कुछ नहीं रहा बाक़ी
नफ़स के नाम पे बस उसका नाम चलता है

न जाने रुकता है क्या क्या हमारी दुनिया में
नज़र से आपकी जब वो पयाम चलता है

वो है कि आ रहा है भला वक़्त मेरी सिम्त
झिझक के रुकता है फिर एक गाम चलता है

चला जो बज़्म में वो मस्त चाल में अपनी
लगा तो आज कि महफ़िल में जाम चलता है

जो कोई तोड़ दिया दिल या दी दग़ा तुमने
बुराई क्या है मियाँ ये तो आम चलता है

चले नसीब भी 'गोबिन्द' इशारों पे मेरे
हुकुम पे आपके जैसे ग़ुलाम चलता है

غزل

چلا جو غم سے میرے تیرا کام چلتا ہے
دِکھا جہاں کو تیرا یوں نظام چلتا ہے

میرے بھی گھر کا تُو اب تو پتہ مجھے دیدے
زمانہ شام کو سوئے قیام چلتا ہے

ہمارے جسم میں اب کچھ نہیں رہا باقی
نفس کہ نام پہ بس اُس کا نام چلتا ہے

نہ جانے رُکتا ہے کیا کیا ہماری دُنیا میں
نظر سے آپ کی جب وہ پیام چلتا ہے

وہ ہے کہ آرہا ہے بھلا وقت میری سمت
جھجھک کے رکتا ہے پھر ایک گام چلتا ہے

چلا جو بزم میں وہ مست چال میں اپنی
لگا تو آج کی محفل میں جام چلتا ہے

جو کوئی توڑ دیا دل یدی دغا تم نے
بُرائی کیا ہے میاں یہ تو عام چلتا ہے

چلیں نصیب بھی گو بند اشاروں پہ میرے
حُکم پہ آپ کے جیسے غلام چلتا ہے

ग़ज़ल

क़िस्मत को मेरी आपने क्या .खूब बनाया
कोई भी काम मेरा क़भी बनने न पाया

कैसा हंसा हूँ ग़म में ज़रा देख ऐ .खुशी
क्या मुझको तूने जा के कभी ऐसा रुलाया

ये जानते हुए भी कि पूरा न होगा ये
क्यों तुमने वही .ख्वाब हमें फिर से दिखाया

देते हो तुम ये जिस्म हमें रहने के लिए
फिर दे के दुख वसूलते हो इसका किराया

तूने जो दिया हाथ से उसमें तो थी शराब
क्या भर दिया था उसमें जो आँखों से पिलाया

क्या भूल गए दी थी हमें तुमने आशिक़ी
हमने क्या दिल में जान के ये दर्द बसाया

बच जाएँगे अगरचे गिरे आसमान से
क्या होगा अगर आपने नज़रों से गिराया

जो कुछ छुपा है उससे ही रौशन है तसव्वुर
क्या सोचेंगे हम आपने गर पर्दा उठाया

महसूस तेरे क़ुर्ब को यूँ दिल ने किया है
'गोबिन्द' जैसे .खुद से भी एक राज़ छुपाया

غزل

قسمت کو میری آپ نے کیا خوب بنایا
کوئی بھی کام میرا کبھی بننے نہ پایا

کیسا ہنسا ہوں غم میں ذرا دیکھ اے خوشی
کیا مجھ کو تو نے جا کے کبھی ایسا رلایا

یہ جانتے ہوئے بھی کہ پورا نہ ہوگا یہ
کیوں تم نے وہی خواب ہمیں پھر سے دکھایا

دیتے ہو تم یہ جسم ہمیں رہنے کے لئے
پھر دے کے دُکھ وصولتے ہو اس کا کرایہ

تو نے جو دیا ہاتھ سے اس میں تو تھی شراب
کیا بھر دیا تھا اس میں جو آنکھوں سے پلایا

کیا بھول گئے دی تھی تم نے ہمیں عاشقی
ہم نے کیا دل میں جان کے یہ درد بسایا

بچ جائیں گے اگرچہ گرے آسمان سے
کیا ہوگا اگر آپ نے نظروں سے گرایا

جو کچھ چھپا ہے اُس سے ہی روشن ہے تصوّر
کیا سوچیں گے ہم آپ نے گر پردہ اُٹھایا

محسوس تیرے قُرب کو یوں دل نے کیا ہے
گو بند جیسے خود سے بھی ایک راز چھپایا ہے

ग़ज़ल

ऐ दिल चलो कि आज ज़रा उनसे मिल के आयँ
अपने तसव्वुरात का कुछ फ़ायदा उठायँ

दिल अपने बयाबाँ में ही आवाज़ दे उन्हें
ख़्वाबों का ऐतबार क्या फिर आयँ के न आयँ

कुछ कम तो होय हमपे ये तनहाई का आलम
चाहे भरम का आइना ही ख़ुद को हम दिखायँ

चाहे हो शब को तारों भरा आसमान ही
हम सा तो हो कि जिसको दिल के दाग़ हम दिखायँ

क़िस्मत है तीरगी है उसपे उन की बेरुख़ी
कोई एक हो तो बात है किस किस से हम निभायँ

जो बदगुमानियाँ सी हुईं पिछली मरतबा
शायद वो सोच कर ही ज़रा अब के मुस्कुरायँ

उस एक में जहान है ये मान लें 'गोबिन्द'
हम भी हैं उस जहान में ये कैसे भूल जायँ

اے دل چلو کہ آج ذرا اُن سے مل کے آئیں
اپنے تصورات کا کچھ فائدہ اٹھائیں

دل اپنے بیاباں ہیں ہی آواز دے انہیں
خوابوں کا اعتبار کیا پھر آئیں کہ نہ آئیں

کچھ کم تو ہوئے ہم پہ یہ تنہائی کا عالم
چاہیے بھرم کا آئینہ ہی خود کو ہم دکھائیں

چاہیے ہو شب کو تاروں بھرا آسمان ہی
ہم سا تو ہو کہ جس کو دل کے داغ ہم دکھائیں

قسمت ہے تیرگی ہے اُس پہ اُن کی بے رُخی
کوئی ایک ہو تو بات ہے کس کس سے ہم نبھائیں

جو بدگمانیاں سی ہوئیں پچھلی مرتبہ
شاید وہ سوچ کر ہی ذرا اب کے مسکرائیں

اُس ایک میں جہان ہے یہ مان لیں گو بند
ہم بھی ہیں اُس جہان میں یہ کیسے بھول جائیں

ग़ज़ल

गुल हैं लेकिन सोचिये तो गुलसिताँ हम ही तो हैं
साँस जिसमें ले रहे हैं वो जहाँ हम ही तो हैं

आइने से आइने सें आइने के अक्स हैं
जो यक़ीं सा हो रहा है वो गुमाँ हम ही तो हैं

रौशनी को ढूंढते हैं मंदिरो मस्जिद में हम
भूल जाते हैं कि अपने रहनुमा हम ही तो हैं

वक़्त हैं गरदिश में अपनी हैं गुज़रने का गुमाँ
देखने में चल रहा जो कारवाँ हम ही तो हैं

खोए खोए पा रहे हैं भीड़ में अग़ियार की
और कोई भी नहीं है इक यहाँ हम ही तो हैं

گُل ہیں لیکن سوچیئے تو گُلستاں ہم ہی تو ہیں
سانس جس میں لے رہے ہیں وہ جہاں ہم ہی تو ہیں

آئینے سے آئینے میں آئینے کے عکس ہیں
جو یقین سا ہو رہا ہے وہ گماں ہم ہی تو ہیں

روشنی کو ڈھونڈھتے ہیں مندر و مسجد میں ہم
بھول جاتے ہیں کہ اپنے رہنماں ہم ہی تو ہیں

وقت ہیں گردش میں اپنی ہیں گزرنے کا گماں
دیکھنے میں چل رہا جو کارواں ہم ہی تو ہیں

کھوئے کھوئے پا رہے ہیں بھیڑ میں اغیار کی
اور کوئی بھی نہیں ہے ایک یہاں ہم ہی تو ہیں

ग़ज़ल

कह रहे हैं बात अपनी मुझसे कहने के लिये
शर्त ये रक्खी है मेरे पास रहने के लिये

ये तो इत्तेफ़ाक़ है के सामने मैं आ गया
चाहिये था कोई उसको ग़म भी सहने के लिये

ये भी सोना वो भी सोना शक्ल ही तो फ़र्क़ है
कैसे मुमकिन हो समझना एक गहने के लिये

तेरा यूँ मूँ फेर लेना ही बहाना बन गया
यूँ भी एक तो चाहिये था अश्क बहने के लिये

दिल में एक मंदिर बनायेंगे सुकूँ और चैन का
अब के वो आएँ जरा 'गोबिन्द' रहने के लिये

غزل

کہہ رہے ہیں بات اپنی مجھ سے کہنے کے لئے
شرط یہ رکھی ہے میرے پاس رہنے کے لئے

یہ تو اتفاق ہے کہ سامنے میں آگیا
چاہیئے تھا کوئی ان کو غم بھی سہنے کے لئے

یہ بھی سونا وہ بھی سونا شکل ہی تو فرق ہے
کیسے ممکن ہو سمجھنا ایک گہنے کے لئے

تیرا یوں منہ پھیر لینا ہی بہانہ بن گیا
یوں بھی ایک تو چاہیئے تھا اشک بہنے کے لئے

دل میں اک مندر بنائیں گے سکوں اور چین کا
اب کے وہ آئیں ذرا گو بند رہنے کے لئے

ग़ज़ल

जीता हूँ मैं कि मरने का जो हौसला नहीं
तक़दीर का है मेरा कोई फ़ैसला नहीं

सूरज को अपने देख लिया रोज़ डूबते
अब हमको ग़म की रात से कोई गिला नही

कहता है ग़म ये ज़िन्दगी से मेरा मुसलसल
जो टूट जाए मौत से वो सिलसिला नहीं

क्या बात सोचता है मेरा दिल उम्मीद में
मेरे बुरे की बात औ वो कहदे भला नहीं

क्यों है बयाँ सुफ़ैद तेरे स्याह में 'गोबिन्द'
दुनिया ने तेरे मूँ पे ये कालिक मला नहीं

جیتا ہوں میں کہ مرنے کا جو حوصلہ نہیں
تقدیر کا ہے میرا کوئی فیصلہ نہیں

سورج کو اپنے دیکھ لیا روز ڈوبتے
اب ہم کو غم کی رات سے کوئی گلہ نہیں

کہتا ہے غم یہ زندگی سے میرا مسلسل
جو ٹوٹ جائے موت سے وہ سلسلہ نہیں

کیا بات سوچتا ہے میرا دل اُمید میں
میرے بُرے کی بات اُو وہ کہدے بھلا نہیں

کیوں ہے بیاں سُفید تیرے سیاہ میں گو بند
دنیا نے تیرے منہ پہ یہ کالک ملا نہیں

ग़ज़ल

ये क्या अजीब दिल को भी अहसास हुआ है
वो दूर जा के और मेरे पास हुआ है

उमरें गुज़र गईं थी कई जब फ़िराक़ में
चौदह बरस का राम को बनवास हुआ है

ख़ुद ही पे सितम और करम उसने किये हैं
अपना हुआ है साँई कभी दास हुआ है

ले जा के मेरी दास्तां पूछो उसी से तुम
ऐसा भी ज़िन्दगी का कभी नास हुआ है

'गोबिन्द' चैन दिल को नहीं ये भी सोच के
पहले भी सैकड़ों को यही यास हुआ है

غزل

یہ کیا عجیب دل کو بھی احساس ہوا ہے
وہ دور جا کے اور میرے پاس ہوا ہے

عمریں گذر گیئں تھیں کئی جب فراق میں
چودہ برس کا رام کو بن باس ہوا ہے

خود ہی پہ ستم اور کرم اس نے کیے ہیں
اپنا ہوا ہے سایئں کبھی داس ہوا ہے

لے جا کے میری داستاں پوچھو اسی سے تم
ایسا بھی زندگی کا کبھی ناس ہوا ہے

گوبندؔ چین دل کو نہیں یہ بھی سوچ کے
پہلے بھی سینکڑوں کو یہی یاس ہوا ہے

ग़ज़ल

हम पर भला वो .खुद भी कोई राज़ खोलते है
होठों से मुस्करा कर आखों से बोलते हैं

बोले हैं यूँ सम्भल कर इक़रार-ए-इश्क़ में भी
जैसे सियासी नेता अलफ़ाज़ तोलते ·हैं

यूँ ढूंढते हैं मन में क्या दें दोआ में हमको
जैसे ग़रीब अपना थैला खंगोलते हैं

यूँ खेलते है तेरे ये 'हाँ' और 'ना' ज़हन से
जैसे शरीर बच्चे पानी घपोलतें हैं

हिलता है इस तरह से मेरा यक़ीन उस पर
जैसे नफ़े के आगे इमान डोलते हैं

ऐसे हो बेख़बर तुम नूर-ए-खुदा से नासे
जैसे कि अन्धे दिन में रस्ता टटोलते हैं

घुलता है देखो ऐसे पानी में लाल सूरज
जैसे वो गा के अमृत कानों में घोलते हैं

غزل

ہم پر بھلا وہ خود بھی کوئی راز کھولتے ہیں
ہونٹوں سے مسکرا کر آنکھوں سے بولتے ہیں

بولے ہیں یوں سنبھل کر اقرارِ عشق میں بھی
جیسے سیاسی نیتا الفاظ تولتے ہیں

یوں ڈھونڈھتے ہیں من میں کیا دیں دعائیں ہم کو
جیسے غریب اپنا تھیلا کھنگولتے ہیں

یوں کھیلتے ہیں تیرے یہ "ہال اور نہ" ذہن سے
جیسے شریر بچے پانی چھولتے ہیں

ہلتا ہے اس طرح سے میرا یقین اس پر
جیسے نفع کے آگے ایمان ڈولتے ہیں

ایسے ہو بے خبر تم نورِ خدا سے ناصح
جیسے کہ اندھے دن میں رستہ ٹٹولتے ہیں

گھلتا ہے دیکھو ایسے پانی میں لال سورج
جیسے وہ گا کے امرت کانوں میں گھولتے ہیں

ग़ज़ल

उम्मीद का भी दामन अब छूट जाएगा
दिल को न जाने फिर कोई कैसे मनाएगा

दिल जानता है टूटता है जिनको देखकर
ऐसे हसीन .ख्वाब कोई फिर दिखाएगा

रहता हूँ इस तरह से तेरे इन्तेज़ार में
जैसे गया भी वक़्त कभी लौट आएगा

चुभता है दिल में .खार सा जिसका हरेक सुर
फिर से ज़रा वो गीत कोई गुनगुनाएगा

साक़ी किसी भी जाम पे टालेगा बात को
मयख़ाने में आँखों से भला क्यूँ पिलाएगा

कुछ राब्ता रहेगा बिछुड़ने के बाद भी
रोयेंगे हम कहीं वो कहीं मुस्कुराएगा

वो देखने न देगा कभी बादलों में चाँद
ज़ुल्फ़ें गिरा के रूख पे उन्हें .खुद हटाएगा

ऐसे दिखाएगा वो हमें अब तो रात दिन
पलकें गिराएगा कभी पलकें उठाएगा

'गोबिन्द' आँख मिल जो गई उसकी आँख से
समझेगा कोई बात नहीं सर हिलाएगा

غزل

امیّد کا بھی دامن اب چھوٹ جائے گا
دل کو نہ جانے پھر کوئی کیسے منائے گا

دل جانتا ہے ٹوٹتا ہے جن کو دیکھ کر
ایسے حسین خواب کوئی پھر دکھائے گا

رہتا ہوں اس طرح سے تیرے انتظار میں
جیسے گیا بھی وقت کبھی لوٹ آئے گا

چُبھتا ہے دل میں خار سا جس کا ہر ایک سُر
پھر سے ذرا وہ گیت کوئی گُن گنائے گا

ساقی کسی بھی جام پہ ٹالے گا بات کو
میخانے میں آنکھوں سے بھلا کیوں پلائے گا

کچھ رابطہ رہے گا بچھڑنے کے بعد بھی
روئیں گے ہم کہیں وہ کہیں مسکرائے گا

وہ دیکھنے نہ دے گا کبھی بادلوں میں چاند
زلفیں گرا کے رُخ پہ انہیں خود ہٹائے گا

ایسے دکھائے گا وہ ہمیں اب تو رات دن
پلکیں گرائے گا کبھی پلکیں اُٹھائے گا

گو بند آنکھ مل جو گئی اُس کی آنکھ سے
سمجھے گا کوئی بات نہیں سر ہلائے گا

ग़ज़ल

अच्छी नहीं ज़मीन तो फिर आसमाँ को देख
गंगा में वुज़ू करता जा और कहकशाँ को देख़

हो जा नशे में चूर तसव्वुफ़ के एक बार
और तब पलट के फिर से ज़रा इस जहाँ को देख

तुझको लगेगा जैसे वहाँ है ही कुछ नहीं
अपने मेरे वजूद के तू दरमियाँ को देख

बन्दा हूँ तेरा कोशिशें करता तो हूँ मगर
मेरी सकत को देख अपने इम्तेहाँ को देख

आ जाएगा समझ में मेरा हाल ठीक से
जिसपे गिरी हो बर्क़ तू ऐसे मकाँ को देख

इमकान मेरे बचने का तुझसे छुपा है क्या
अपनी अदा और मेरे दिल-ए-नातवाँ को देख

तू क्या मिटेगा दुनिया से हुज्जत किये बग़ैर
मिटना जो सीखना हो नक्श-ए-कारवाँ को देख

कुछ अर्सा ज़रा खो के .खुद ही अपने आप से
मिटता हुआ .खुद अपने ही नामो निशाँ को देख

होती है जिसमें आँखों ही आँखों में बातचीत
'गोबिन्द' समझ के तू भी ज़रा उस ज़बाँ को देख

غزل

اچھی نہیں زمین تو پھر آسماں کو دیکھ
گنگا میں وضو کرتا جا اور کہکشاں کو دیکھ

ہو جا نشے میں چور تصوّف کے ایک بار
اور تب پلٹ کے پھر سے ذرا اس جہاں کو دیکھ

تجھ کو لگے گا جیسے وہاں ہے ہی کچھ نہیں
اپنے میرے وجود کے تو درمیاں کو دیکھ

بندہ ہوں تیرا کوششیں کرتا تو ہوں مگر
میری سکت کو دیکھ اپنے امتحاں کو دیکھ

آجائے گا سمجھ میں میرا حال ٹھیک سے
جس پہ گری ہو برق تو ایسے مکاں کو دیکھ

امکان میرے بچنے کا تجھ سے چھپا ہے کیا
اپنی ادا اور میرے دلِ ناتواں کو دیکھ

تو کیا مٹے گا دُنیا سے حُجت کیئے بغیر
مٹنا جو سیکھنا ہو نقشِ کارواں کو دیکھ

کچھ عرصہ ذرا کھو کے خود ہی اپنے آپ سے
مٹتا ہوا خود اپنے ہی نام ونشاں کو دیکھ

ہوتی ہے جس میں آنکھوں ہی آنکھوں میں بات چیت
گو بند سمجھ کے تو بھی ذرا اُس زباں کو دیکھ

ग़ज़ल

आख़िर को हम जहाँ से गुज़रने को आ गए
अब ये न हो कि फिर यहीं मरने को आ गए

उनकी नज़र से शोख़ शरारत नहीं गई
हम जैसे गुनहगार सुधरने को आ गए

ज़ुल्फ़ें सवँर न पाईं अभी मेरे यार से
याँ ख़्वाब-ए-दीद हैं कि बिखरने को आ गए

देखा है आज उसने पलट कर जो इस तरफ़
लगता है अपने दिन भी बदलने को आ गए

हम तो छुपा गए थे आज दिल की बात फिर
कमबख़्त अश्क थे कि निकलने को आ गए

ये क्या कि दिल में आए मगर सामने नहीं
आए नहीं भी और यूँ कहने को आ गए

हर बार वस्ल का है मज़ा दूसरा 'गोबिन्द'
हम फिर से तुम्हसे मिल के बिछड़ने को आ गए

غزل

آخر ہم جہاں سے گذرنے کو آ گئے
اب یہ نہ ہو کہ پھر یہیں مرنے کو آ گئے

ان کی نظر سے شوخ شرارت نہیں گئی
ہم جیسے گنہگار سُدھرنے کو آ گئے

زلفیں سنور نہ پائیں ابھی میرے یار سے
یاں خوابِ دید ہیں کہ بکھرنے کو آ گئے

دیکھا ہے آج اُس نے الٹ کر جو اس طرف
لگتا ہے اپنے دن بھی بدلنے کو آ گئے

ہم تو چھپا گئے تھے آج دل کی بات پھر
کمبخت اشک تھے کہ نکلنے کو آ گئے

یہ کیا کہ دل میں آئے مگر سامنے نہیں
آئے نہیں بھی اور یوں کہنے کو آ گئے

ہر بار وصل کا ہے مزا دوسرا گو بند
ہم پھر سے تجھ سے مل کے بچھڑنے کو آ گئے

ग़ज़ल

आँखों में ये जो आप के .ख़्वाबीदगी सी है
लगता है जाम-ए-मय में एक तश्नालबी सी है

देखा सुना नहीं तो न माना तेरा वजूद
फिर भी लगा है दिल में एक मौजूदगी सी है

ऐ हुस्न तेरी याद-ए-पाक दिल में क्या बसाएँ
उसको जगह तो ध्यान में तस्बीह की सी है

आया ज़रूर होगा तेरी चाल का .ख़्याल
मेरे तख़य्युलात मे लग़ज़ीदगी सी है

इन्साफ़ क्यों न देख पाए तेरे करम में
अब तक हमारे दिल में एक रंजीदगी सी है

दिल में है .ख़ुशी आज ग़म की इन्तेहा को देख
सरहद पे है जो नूर के वो तीरगी सी है

कैसे मिटाऊँ उम्र मुसीबत में काट के
.ख़ुशियों में मेरी ग़म की जो आलूदगी सी है

इतना करम 'गोबिन्द' पे क्या कम है आपका
परदा है फिर भी आपसे बेपर्दगी सी है

غزل

آنکھوں میں یہ جو آپ کے خوابیدگی سی ہے
لگتا ہے جامِ مے میں ایک تشنہ لبی سی ہے

دیکھا سُنا نہیں تو نہ مانا تیرا وجُود
پھر بھی لگا ہے دل میں ایک موجودگی سی ہے

اے حُسن تیری یادِ پاک دل میں کیا بسائیں
اس کی جگہ تو دھیان میں تسبیح کی سی ہے

آیا ضرور ہوگا تیری چال کا خیال
میرے تخیّلات میں بغیر لغزیدگی سی ہے

انصاف کیوں نہ دیکھ پائے تیرے کرم میں
اب تک ہمارے دل میں ایک رنجیدگی سی ہے

دل میں ہے خوشی آج غم کی انتہا کو دیکھ
سرحد پہ ہے جو نور کے وہ تیرگی سی ہے

کیسے مٹاؤں عمرِ مُصیبت میں کاٹ کے
خوشیوں میں میرے غم کی جو آلودگی سی ہے

اتنا کرم گو بندہ پہ کیا کم ہے آپ کا
پردہ ہے پھر بھی آپ سے بے پردگی سی ہے

ग़ज़ल

यूँ ही एक नज़र वो तो डाल के ज़रा मुस्कुरा के चले गए
यहाँ तीर जैसे जिगर में सौ मुझे बिलबिला के चले गए

मैने दिल का अपने जो हाल था उन्हें खुल के आज सुना दिया
नहीं कुछ भी उनपे असर हुआ यूँ ही सुन सुना के चले गए

हमें लेना क्या है सवाल से ऐ जहान तेरे वजूद के
हम तो आए बाग़ में ग़ुन्चे से यहाँ खिलखिला के चले गए

रहो मुब्तिला हमें क्या मगर कभी इतना भी तो किया करो
कभी आते जाते ही रुक लिए ज़रा मिलमिला के चले गए

जमीं सर्द आहों की बर्फ़ है मेरे दिल के अब भी तलाब में
कई आफ़ताब उम्मीद के यूँ ही टिलटिला के चले गए

वो भी क्या करें जो है टूटा दिल कभी उनसे गरचे 'गोबिन्द' का
ये तो है नहीं कि बज़ार से नया दिल दिला के चले गए

غزل

یوں ہی ایک نظر وہ توڑ ڈال کے ذرا مسکرا کے چلے گئے
یہاں تیر جیسے جگر میں سو مجھے بلبلا کے چلے گئے

میں نے دل کا اپنے جو حال تھا انہیں کھل کے آج سُنا دیا
نہیں کچھ بھی اُن پہ اثر ہوا یوں ہی سُن سُنا کے چلے گئے

ہمیں لینا کیا ہے سوال سے اے جہاں تیرے وجود کے
ہم تو آئے باغ میں غنچے سے یہاں کِھل کھلا کے چلے گئے

رہو مبتلا ہمیں کیا مگر کبھی اتنا بھی تو کیا کرو
کبھی آتے جاتے ہی رُک لئے ذرا مِل مِلا کے چلے گئے

جمی سرد آہوں کی برف ہے میرے دل کے اب بھی تلے میں
کئی آفتاب اُمید کے یوں ہی ٹِل ٹِلا کے چلے گئے

وہ بھی کیا کریں جو ہے ٹوٹا دل کبھی ان سے گرچہ گو بند کا
یہ تو ہے نہیں کہ بزار سے نیا دل دِلا کے چلے گئے

ग़ज़ल

दिल को न यूँ लगाइए दूकान की तरह
हम बिक न जाँय लोभ में इमान की तरह

भरियेगा आप ज़ख्म भी क्या उसकी तरह से
करते हैं आप ज़ुल्म जो भगवान की तरह

तोहफ़ा न ज़िन्दगी का हमें देना फिर ख़ुदा
अबके तो हम भुगत गए नुक़सान की तरह

वैसे गुनाह करता तो शायद ख़ुदा भी गर
रहता वो ज़द में मौत की इन्सान की तरह

ऐसा बसा है दिल में वो दाता मुराद का
निकला नहीं है आज तक अरमान की तरह

मालिक को अपने जाने यहाँ कब मिलेंगे हम
कब से पड़े हैं गुमशुदा सामान की तरह

जाना है कुछ न छोड़ के बैराग में 'गोबिन्द'
रहना है अपने घर में ही मेहमान की तरह

غزل

دل کو نہ یوں لگایئے دُکان کی طرح
ہم بک نہ جایئں لو بھ میں ایمان کی طرح

بھر یئے گا آپ زخم بھی کیا اُس کی طرح سے
کرتے ہیں آپ ظُلم جو بھگوان کی طرح

تحفہ نہ زندگی کا ہمیں دینا پھر خُدا
اب کے تو ہم بُھگت گئے نقصان کی طرح

ویسے گُناہ کرتا تو شاید خدا بھی گر
رہتا وہ زد میں موت کی انسان کی طرح

ایسا بسا ہے دل میں وہ داتا مُراد کا
نکلا نہیں ہے آج تک ارمان کی طرح

مالک کو اپنے جانے یہاں کب ملیں گے ہم
کب سے پڑے ہیں گمشدہ سامان کی طرح

جانا ہے کچھ نہ چھوڑ کے بیراگ میں گوبند
رہنا ہے اپنے گھر میں ہی مہمان کی طرح

ग़ज़ल

बात ये है आज कल मौसम नहीं
वर्ना यारों में वफ़ा कुछ कम नहीं

सुनता तो है क्या करे वो भी अगर
अब जो अपनी बात में ही दम नहीं

आप नाकामी पे मेरी क्या हँसे
गरचे अब तक आँख भी पुरनम नहीं

.ख़ुश न हों गुल अश्क मेरे देख कर
इनको क्या मालूम ये शबनम नहीं

पहले ग़म था के .ख़ुशी कोई नहीं
अब हमें इस बात का भी ग़म नहीं

जिसने तारे हैं अधम मुझसे बोहत
अब तेरी बन्सी में वो सरगम नहीं

ये जो 'गोबिन्द' है जहाँ में मुब्तिला
लगता है हम हैं मगर ये हम नहीं

غزل

بات یہ ہے آج کل موسم نہیں
ورنہ یاروں میں وفا کچھ کم نہیں

سُنتا تو ہے کیا کرے وہ بھی اگر
اب جو اپنی بات میں ہی دم نہیں

آپ ناکامی پہ میری کیا ہنسے
گرچہ اب تک آنکھ بھی پُرنم نہیں

خوش نہ ہوں گُل اشک میرے دیکھ کر
ان کو کیا معلوم یہ شبنم نہیں

پہلے غم تھا کہ خوشی کوئی نہیں
اب ہمیں اس بات کا بھی غم نہیں

جس نے تارے ہیں اُدھم مجھ سے بہت
اب تیری بنسی میں وہ سرگم نہیں

یہ جو گو بند ہے جہاں میں مبتلا
لگتا ہے ہم ہیں مگر یہ ہم نہیں

ग़ज़ल

हज़रत 'गोबिन्द' ऐश यूँ दुनियाँ में कर गए
देखा अटल है मौत तो खा पी के मर गए

लगता नहीं कि नींद खुली अपनी आज तक
अपने तो .ख्वाब .ख्वाब में आकर बिखर गए

जैसे मेरे .ख्याल हों महफ़िल के लोग बाग
जाने कहाँ से आए थे जाने किधर गए

सब ही दिवारें आस की नापायदार थीं
छत गिर चुकी जो आज तो हम अपने घर गए

हम जो गए करम के समन्दर पे आप के
मौजों को देख आप की रहमत से डर गए

जब भी बढ़ीं .खामोशियाँ वीरान-ए-दिल मे यूँ
यादों के कई क़ाफ़िले आ कर ठहर गए

जैसे सुनी है आपने फ़रियाद-ए-दिल अभी
लगता है दिल से आपके अब हम उतर गए

नश-ए-अना पिला के हमें भेजा बज़्म में
हम बेख्बर ही आए यहाँ बेख़बर गए

आया है वक़्त-ए-बद भी अब के इतमिनान में
जैसे पलंग पे आ के हम अपने पसर गए

غزل

حضرت گوبند عیش یوں دنیا بیں کر گئے
دیکھا اٹل ہے موت تو کھا پی کے مر گئے

لگتا نہیں کہ نیند کھلی اپنی آج تک
اپنے تو خواب خواب میں آکر بکھر گئے

جیسے میرے خیال ہوں محفل کے لوگ باگ
جانے کہاں سے آئے تھے جانے کدھر گئے

سب ہی دیوار بس آس کی ناپائیدار تھیں
چھت گر چکی جو آج تو ہم اپنے گھر گئے

ہم جو گئے کرم کے سمندر پہ آپ کے
موجوں کو دیکھ آپ کی رحمت سے ڈر گئے

جب بھی بڑھیں خاموشیاں ویرانِ دل میں یوں
یادوں کے کئی قافلے آکر ٹھہر گئے

جیسے سُنی ہے آپ نے فریادِ دل ابھی
لگتا ہے دل سے آپ کے اب ہم اتر گئے

نشہ انا پلا کے ہمیں بھیجا بزم بیں
ہم بے خبر ہی آئے یہاں بے خبر گئے

آیا ہے وقتِ بد بھی اب کے اطمینان بیں
جیسے پلنگ پہ آکے ہم اپنے پسر گئے

ग़ज़ल

ऐसा कहाँ कि अब वो घर अपने आयँ वाँयँ।
सौदा बज़ार से हम बढ़िया सा लाँय वाँयँ।।

अच्छा सा पके खाना सब मिलके खायँ वाँयँ।
फ़ुरसत से फिर वो बैठें तबियत से गाँय वाँयँ।।

अब तो है काम की ही बस सबको धाँयँ धाँयँ।
दिन भर के थके लौटें फिर .खाक आयँ जायँ।।

फ़ुरसत कहाँ है उनको कोई ज़ुल्म ढायँ वाँयँ।
क़िस्मत में अब कहाँ है ज़ुल्फ़ों की छाँयँ वाँयँ।।

ख़ाली है दिल का आंगन करता है साँयँ साँयँ।
गरमी की दोपहर है कउए की काँयँ काँयँ।।

अपने बुलावे उनको मुश्किल है भायँ वाँयँ।
जान जानो निकली जब तक वो आँयँ आँयँ।।

ओ देने वाले सबको कुछ हम भी पायँ वाँयँ।
पूरा हो अब तमाशा तो हम भी जाँय वाँयँ।।

غزل

ایسا کہاں کہ اب وہ گھر اپنے آئیں وائیں
سودا بزار سے ہم بڑھیا سالائیں وائیں

اچھا سا پکے کھانا سب مِل کے کھائیں وائیں
فرصت سے پھر وہ بیٹھے طبیعت سے گائیں وائیں

اب تو ہے کام کی ہی بس سب کو دھائیں دھائیں
دن بھر کے تھکے لوٹے پھر خاک آئیں جائیں

فرصت کہاں ہے ان کو کوئی ظُلم ڈھائیں وائیں
قسمت میں اب کہاں ہے زلفوں کی چھائیں وائیں

خالی ہے دل کا آنگن کرتا ہے سائیں سائیں
گرمی کی دوپہر ہے کوّے کی کائیں کائیں

اپنے بلا وے ان کو مشکل ہے بھائیں وائیں
جان جا تو نکلی جب تک وہ آئیں وائیں

او دینے والے سب کو کچھ ہم بھی پائیں وائیں
پورا ہو اب تماشہ تو ہم بھی جائیں وائیں

مثال کے طور پر فیض کا شعر۔

وہ بات سارے فسانے میں جس کا ذِکر نہ تھا
وہ بات اُن کو بہت ناگوار گزری ہے

احمد ندیم قاسمی کا شعر۔

بُلا رہے ہیں اُفق پر جو زرد رُو ٹیلے
کہو تو ہم بھی فسانوں کے راز ہو جائیں

قتیلؔ شفائی کا شعر۔

چلو اچھا ہوا کام آ گئی دیوانگی اپنی
وگرنہ ہم زمانے بھر کو سمجھانے کہاں جاتے

مطلب یہ ہے کہ الفاظ تو "پول والٹ" والے ڈنڈے کی طرح ہے جن کی مدد سے ہم پھاندکر اپنی اونچائی سے زیادہ بلندی پار کر جاتے ہیں۔ میں اس کتاب کے شائع ہونے کے موقع پر اپنی رفیقِ حیات چندراولی کا بھی شکریہ ادا کرنا چاہوں گا ان سب ذلّتوں اور پریشانیوں کے لیئے جو آجکل کی دنیا میں ایک ناکامیاب انسان کی بیوی کو اُٹھانی پڑتی ہیں۔

وریندر ناتھ بلی "گوبند"

ڈھلنے میں اپنا اپنا رُول ادا کیا۔ مگر صورت سے زیادہ شاید سیرت کی اہمیت مانی گئی ہے۔

میری شاعری میں فکر جو ہے اُس میں آپ کو مُسلسل طور پر ایک مضمون ملے گا اور وہ ہے ویدانت۔ یعنی یہ احساس کہ وہ ایک ہی ہے اور اُس کے علاوہ یا اس کے باہر کچھ نہیں ہے۔ یہ میری روحانی گرُو اور سب کچھ۔ شری شری آنند مئی ماں کی بڑی بھاری مہر ہے دین ہے، جو باتیں کہنے سُننے یا سمجھنے کے پرے ہوتی ہیں وہ ماں جیسے مقدّس سنتوں، ہیروں، فقیروں کی بارگاہوں میں جانے سے اپنے احساسات کی گہرائیوں میں نہ جانے کب ہوکر جذب ہو جاتی ہیں۔ یہ کوئی نہیں جان سکتا۔

میرا تخلّص گو بند میرے بچپن سے میرا گھر کا نام ہے جس سے میں اپنے آپ کو پہچانتا ہوں۔ شاعری بہت گہرا ذاتی حادثہ ہونے کی وجہ سے یہ نام اس کے ساتھ بے ساختہ ہی وابستہ ہونے سے رہ نہ سکا۔ مجھے دیوناگری script میں شائع تقریباً اُردو کے سارے ہی مشہور شاعروں کا کلام پڑھنے کو مِلا۔ مجھے خاص طور پر میر تقی میر۔ فراق گورکھپوری۔ فیض احمد فیض۔ جگر مُرادآبادی۔ احمد فراز۔ ندیم قاسمی اور قتیل شفائی کی شاعری نے متاثر کیا۔ فراق کا جو اس قسم کا رنگ ہے جیسے۔

جیسے ہجر و وصالِ یار کا پردہ اُٹھا دیا
خود بڑھ کے عشق نے مجھے میرا پتہ دیا
وہ سامنے ہے اور نظر سے چھُپا دیا
اے عشق بے حجاب مجھے کیا دِکھا دیا

اس نے مجھ پر گہری چھاپ ڈالی۔

میرے ذہن میں لِلت کلاؤں یعنی فنونِ لطیفہ کا جو کانسیپٹ ہمیشہ رہا ہے وہ ہے کہ وہ جو بیان کے پرے ہے اس کی طرف دلکش انداز میں مبہم سا اشارہ بھر۔ چاہے وہ الفاظ کے ذریعہ ہو۔ چاہے موسیقی کے ذریعہ ہو۔ چاہے کسی پنٹینگ یا فلم کے ذریعہ ہو۔

جو ایک جگہ کوٹھری میں بند سڑ رہے ہیں اُن کو وہاں سے نکال کر اُن کی منزلوں تک پہنچانے کو اہمیت نہ دے کر اس بات کو زیادہ اہمیت دی جائے کہ یہ کونسی گاڑی میں بیٹھ کر جائیں گے۔

حقیقت یہ ہے کہ چاہے وہ کسی کی غلطی سے کیوں نہ ہوا ہو آج کے دن ہمارے ملک میں لکھنؤ، دہلی، حیدرآباد جو بھی ایسے علاقے ہیں جہاں کی اُردو مادری زبان ہے اور عام بول چال کی بولی ہے وہاں زیادہ تر پڑھے لکھے لوگ دیوناگری ہی پڑھ لکھ سکتے ہیں۔ عربی اِسکرپٹ اُنہیں کبھی پڑھائی ہی نہیں جاتی اس لیئے بجائے اس کے کہ ان تمام اُردو والے علاقوں میں ہم پہلے اُردو اِسکرپٹ سِکھائے جانے کے لیئے ایک لمبی لڑائی لڑتے رہے۔ کیوں نہ اُردو لکھنے پڑھنے کے لیئے ہم دیوناگری اسکرپٹ کا ہی استعمال عام طور پر شروع کر دیں؟

کم سے کم اُردو زبان تو زندہ رہے گی کیا اُردو کے چاہنے والے یہ نہیں چاہتے کہ ہم پڑھے لکھے ادیبوں اور شعراء کو بھی ان سیاسی مطلبیوں کے بہکاوے میں آجانا چاہیئے جو اُردو زبان کو مسلم مذہب اور ہندی کو ہندو دھرم کے ساتھ نتھّی کرنا چاہتے ہیں میں اُن پبلشرز کا تہہِ دل سے شکر گزار ہوں جنہوں نے اُردو کے مشہور ہندوستانی اور پاکستانی شاعروں کا کلام دیوناگری اِسکرپٹ میں چھاپا ہے جس کی بدولت میرے جیسے ادبی پیاسوں کو راحت ملی ہے۔

ویسے یہ راستہ دوطرفہ ہے جہاں ادب سے عام بول چال کی زبان سنورتی ہے وہاں ادب بھی عام بول چال سے مسلسل رابطہ رہنے سے تروتازہ رہتا ہوتا ہے۔ جو ادب عام بول چال سے کٹ جاتا ہے اس کا پھر سنسکرت والا حال ہو جاتا ہے۔ وہ پھر لائبریریوں کی الماریوں میں ہی محدود ہو کر رہ جاتا ہے۔

خیر یہ سب بات رہی اُن اثرات کی جنہوں نے میرے سُخن کی شکل وصورت

ہوں۔

ہمیں اسکولی تعلیم کے وقت سے ہی دیوناگری لپی میں ہی سب کچھ پڑھایا لکھایا گیا حالانکہ ہماری لکھنؤ والوں کی مادری زبان اُردو ہی تھی۔ مجھے اچھی طرح یاد ہے کہ پارٹیشن کے فوراً بعد سے اُردو سے اپنی زبان کا وجود جتنا الگ ہو سکے دکھانے کے لئے ایک دم سے آکاش وانی کے سماچاروں اور کئی ہندی اخباروں میں ایسے نئے نئے اٹپٹے الفاظ لے کر زبان استعمال ہونے لگی کہ جو ہماری ہندوستانیوں کی خود ہی ٹھیک سے سمجھ میں نہیں آتی تھی۔ یہ لگتا ہی نہیں تھا کہ یہ ہماری بولی ہے۔

مجھے اچھی طرح یاد ہے کہ ہمارے کالج کے وقتوں میں ہم لوگ جنہیں عمدہ لٹریچر پڑھنے کا شوق تھا وہ یہ محسوس کرتے تھے کہ کاش ہمیں اردو اسکرپٹ پڑھنا آتا تو ہم اردو کے اچھے اچھے شاعروں اور ادیبوں کو پڑھ سکتے۔ اس وقت تک ہندی لٹریچر میں پڑھنے کے لئے کچھ خاص نہیں تھا جو کہ کالج کے لیول پر لگی ہوئی دماغی پیاس کو بجھا سکے۔ ہم لوگ ہار کے انگریزی یا انگریزی میں ترجمہ کیا ہوا روسی اور فرانسیسی لٹریچر پڑھ کے گزارہ کیا کرتے تھے۔ بڑی سخت کوفت ہوتی تھی۔ ایسا لگتا تھا جیسے ہماری ایک پوری پیڑھی اپنی ادبی روایات اور تہذیب سے کٹتی چلی جا رہی ہے۔ آج بھی جب اُردو زبان کو پرموٹ کرنے کی بات ہوتی ہے تو اُردو کی کانسیپٹ عربی اسکرپٹ میں لکھی جانے والی زبان تک ہی محدود دمان کے بات کرتے ہیں اُردو کے حمائیتی۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ اسکرپٹ اور زبان کا آپس میں چولی دامن کا ساتھ ہوتا ہے لیکن ہمیں یہ نہیں بھول جانا چاہیئے کہ کسی بھی زبان کی سب سے بڑی ذمہ داری ہے ایک کی بات دوسرے تک پہنچانا۔ زبان میں الفاظ ہوتے ہیں اور الفاظ میں معنی۔ اسکرپٹ تو محض ایک ذریعہ ہے۔ ایک گاڑی ہے۔ جس میں بیٹھ کر الفاظی شکل میں جو معنی ہیں انہیں ایک سے دوسری جگہ پہنچایا جاتا ہے۔ ایسے میں یہ کہاں کی عقلمندی ہے کہ معنی

اور سینکڑوں شعر اور غزلیں وغیرہ ہیں جو صرف میٹھے بھگتی رس سے بھری ہوئی ہے۔ مثال کے طور پر۔

بانکے بہاری جی کے ہیں سنکٹ ہرن چرن
تم صاف رکھو آئینۂ دل کو چند رہر
ہونگے کبھی تو آپ کے جلوہ فگن چرن

تیسری طرف مرحوم نانا جان زیادہ تر مزاحیہ اور طنزیہ رنگ میں ہی شاعری کرتے تھے۔ مثال کے طور پر۔

"جاتا تو ہوں کوئے جاناناں نہ سہی ملاقات کثرت ہی سہی"۔ یا

"جب سے بڑھائی ڈاڑھی کم بولنے لگے وہ
ہے بے صدا وہ چینی جس میں کہ بال آیا"

یا

کل رات مجھ سے بھاگی بنگش کے پل گئی
میں اس کے پیچھے بھاگا پر لانگ کھل گئی
ساری رات ڈھونڈھا۔ صبح خود ہی مل گئی
یوں ہی فراق بھینس میں شب اپنی گھل گئی

ایک بڑی بھاری صفت مرحوم نانا جان کی شاعری میں یہ تھی کہ وہ دلّی کی عام بول چال یعنی روزمرّہ کی زبان میں ہی سب کچھ بخوبی کہہ جاتے تھے۔ غرض یہ کہ ان تین رنگوں سے میری شاعری متاثر ہوئی ہے۔ زیادہ اثر مجھے لگتا ہے والد مرحوم کا ہی ہوا ہے کیونکہ جو بھی سنتا ہے وہ میرے الفاظ میں موسیقی اور لے کاری پاتا ہے۔ ایک اور حقیقت جس کا میرے سخن کی موجودہ شکل و صورت پر گہرا اثر رہا ہے وہ یہ ہے کہ میں عربی اسکرپٹ (جس میں کہ عام طور پر اردو لکھی پڑھی جاتی ہے) کا الف ب بھی نہیں جانتا

جنہوں نے نہ صرف میرے اِس غزلوں کے مجموعہ کو اردو اسکرپٹ میں لکھوانے کا انتظام جناب نظیر احمد صاحب کی معرفت کروایا۔ بلکہ میری غزلیں سُن کر بہت ہی حوصلہ بڑھانے والی داد بھی دی۔ سیٹھی صاحب جیسے آرٹ کے قدر دان سے داد ملنا میں اپنی انتہائی عزّت افزائی سمجھتا ہوں۔

میری شاعری میں کئی مختلف رنگ نظر آتے ہیں۔ اس کی وجہ ایک تو یہ ہے کہ میرے اُوپر میرے مرحُوم والد رائے سُریندر ناتھ بلی صاحب غریب میرے مرحُوم دادجان رائے بہادر، رائے چندر رہر بلی صاحب اور میرے مرحُوم نانا جان رائے بہادر برندا بن صاحب تینوں کا کچھ نہ کچھ اثر ہے۔ اور کیونکہ یہ تینوں مرحُوم شعرا ایک دوسرے سے قطعی جُدا انداز میں لکھتے تھے۔ میری شاعری کچھ رنگ برنگی سی ہو گئی۔ میرے مرحوم والد کا سنجیدہ اور فلسفانہ انداز تھا اور ایک اونچے معیار کے موسیقار ہونے کی وجہ سے اُنکی شاعری کی نس نس میں ترنّم گونجتا تھا۔ مثال کے طور پر۔

بکھر جائے گی میری داستاں رازِ جہاں بنکر، غُبار آسماں بن کر
نہ ہوں گی منزلیں حائل نہ ہو گا ہمسفر کوئی
پڑے رہ جائیں گے صحرا میں نقشِ کارواں بن کر
زمین کے مہماں بن کر
زمیں بھی رکھ نہ پائے گی ہماری بوئے ہستی کو
گزر جائیں گے گلشن سے گُلِ دورِ خزاں بن کر
نگاہِ باغباں بن کر۔

دوسری طرف میرے مرحوم دادا جان برندا بن کے بانکے بہاری جی اور رادھیکا جی کے بڑے بھاری بھگت تھے۔ انہوں نے ہی ہم چاروں بھائیوں کے نام کرشنا جی کے ناموں پر گوپال، گوبند، موکند اور مادھور کھے تھے۔ اُن کی ساری شاعری جو کہ کئی سو کوت

پیش گفت

وہ منظر جس میں ساری کائنات کے وجود کا احساس ایک اکھنڈ منڈل کی شکل میں ہوتا ہے جس میں سب کچھ شامل ہے اور جس کے باہر کچھ نہیں اُس منظر کو دکھانے والے جو میرے گرو ہیں میں سب سے پہلے ان کی عبادت کرتا ہوں. اس کے بعد میں اُن مہربانوں کا شکریہ ادا کرنا چاہوں گا جن کی وجہ سے موجودہ کتاب شائع ہو رہی ہے اُن میں پہلا نام ہے جناب امرناتھ جی سہگل کا جنہوں نے پہلی بار جنوری ۱۹۹۳ میں میری دو تین غزلیں سُن کر ہی میری شاعری کو اس قابل سمجھا کہ اسے ایک دیوان کی صُورت میں شائع کیا جائے. یہی نہیں انہوں نے تو خود اس خیال کو فوراً انجام بھی دینے کا بیڑہ اٹھالیا اور نہ صرف میری ملاقات نریندر کمار جی سے کروائی۔

پھر میں اپنے چھوٹے بھائی نریندر بلی مُکند جی کا شکریہ ادا کرنا چاہوں گا. مکند جی امریکہ میں رہتا ہے اور اس جنوری میں چھٹیوں پر ہندوستان یہ تہیّہ کر کے آیا تھا کہ مجھے میرے ڈوبے ہوئے بزنس کی دل دل میں سے باہر نکال کر اس قابل بنا کے جائے گا کہ میں اپنا پسندیدہ لکھنے لکھانے کا کام بنا کسی دوسری فکر و پریشانیوں میں مبتلا رہے. پُورا من لگا کے کر سکوں اور اپنے اس مقصد میں کامیاب ہونے کی طرف مجھے امرناتھ سہگل صاحب سے ملوانا شائد اس کا پہلا قدم تھا. وہ اور بھی بہت کچھ کر گیا اور کر رہا ہے. اِس سلسلے میں جس کی تفصیل یہاں بیان کرنا واجب نہیں.

تیسرے میں نریندر کمار صاحب کا شکریہ ادا کروں گا جنہوں نے میرے جیسے ایک نئے شاعر کے کلام کو شائع کر کے نوّاز دیا ہے.

میں پھر ایسوسی ایٹڈ آرٹسٹ کے. این. این سیٹھی صاحب کا شکریہ ادا کروں گا.

خاموشی کی لہریں

وریندر ناتھ بلی گوبند

ادب پبلی کیشنز۔ نئی دہلی

۱۹۹ اور ۹۳ کے بیچ ہوئی ... ۱۹۹۰ میں بمبئی میں
ر رہا تھا. ٹی وی پر دکھائے جانے کیلئے اسکو لکھنے کیلئے مجھے کہ ترجمہ
میں نے ڈرامے وغیرہ تو کئی لکھے تھے مگر گانے لکھنے کا یہ پہلا
ں کو لکھنے کے بعد دلی آگیا. لیکن دلی واپس آجانے کے بعد
ا یکدم لکھنے سے دل کی گہرائیوں میں چھوڑ گیا تھا وہ پھر رواں ہو
ان ہے اور آج کا دن اکثر صبح صبح [illegible] کے تڑکے کے عالم میں
ر ایک نئی غزل کا مطلع دماغ میں چلتا ہوا پاتا ہوں اور پھر
تے ہیں جیسے کسی بہت عرصے سے بند قوت کو نکاسی مل گئی ہو۔
ر شاد مانتا ہوں اور بڑی عزت کے ساتھ فوراً بستر سے اٹھ کر
یار کرتا ہوں. پھر کچھ سنوارنا بگڑنا تو پڑتا ہے مگر بنیادی طور پر
دکی کو ان کی چھپی ہوئی گہرائیوں سے نکال لاتا ہے.

CALL No.

ACC. NO.

AUTHOR

TITLE

THE BOOK MUST BE CHECKED AT THE TIME OF ISSUE

IQBAL LIBRARY
UNIVERSITY OF KASHMIR

Acc. No. ________ *Call No.* ________

1. This book should be returned on or before the last da stamped.
2. Overdue charges will be levied under rules for each day the book is kept beyond the date stamped above.
3. Books lost, defaced or injured in any way shall have to replaced by the borrowers.

Help to keep this book fresh and clean

UBT9

Cut by Shg.

۱۹۹… اور ۹۳ کے بیچ ہوئی ۔ ۱۹۹۰ میں بمبئی میں
…ر رہا تھا۔ ٹی وی پر دکھائے جانے کیلئے اسکو لکھنے کیلئے مجھ سے کہا تو
…میں نے ڈرامے وغیرہ تو لکھے تھے مگر گانے لکھنے کا یہ پہلا
…ں کو لکھنے کے بعد دلی آگیا۔ لیکن دلی واپس آجانے کے بعد
…ا ایکدم لکھنے سے دل کی گہرائیوں میں چھپ گیا تھا وہ پھر ابھرا و
…ان ہے اور آج کا دن اکثر صبح صبح تڑکے تڑکے کے عالم میں
…ور ایک نئی غزل کا مطلع دماغ میں چھپا ہوا پاتا ہوں اور پھر
…تے ہیں جیسے کسی بہت عرصے سے بند قوت کو نکاسی مل گئی ہو۔
…پر شاد مانتا ہوں اور بڑی عزت کے ساتھ فوراً بستر سے اٹھ کر
…یار کرتا ہوں۔ پھر تھوڑا بہت سنوارنا بگاڑنا تو پڑتا ہے مگر بنیادی طور پر
…دل کی کوان کی چھپی ہوئی گہرائیوں سے نکل کر آتا ہے۔

خاموشی کی لہریں

شعری مجموعہ